'राम-वन'

जैव विविधता, अनुसंधान और संस्कृति का संक्षिप्त परिचय

डॉ. प्रभात तिवारी
डॉ. एम.जे. डोबरियाल
डॉ. मनीष श्रीवास्तव
रोहित

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी–284003, उत्तर प्रदेश, भारत
www.rlbcau.ac.in

‘राम-वन’

जैव विविधता, अनुसंधान और संस्कृति का संक्षिप्त परिचय

डॉ. प्रभात तिवारी
डॉ. एम.जे. डोबरियाल
डॉ. मनीष श्रीवास्तव
रोहित

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी–284003, उत्तर प्रदेश, भारत
www.rlbcau.ac.in

पुस्तकः राम–वनः जैव विविधता, अनुसंधान और संस्कृति का संक्षिप्त परिचय

प्रेरणा स्त्रोत :

प्रो अशोक कुमार सिंह

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.)

प्रकाशकः

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.)

दूरभाषः 0510–2730777

ई–मेलः vcribcau@gmail-com

वेबसाइटः www-ribcau-ac-in

सम्पादन एवं संकलन :

डॉ. प्रभात तिवारी

डॉ. एम.जे. डोबरियाल

डॉ. मनीष श्रीवास्तव

रोहित

मुद्रित वर्षः जनवरी, 2026

978-93-5659-992-5

मुद्रकः

रूद्र इण्टरप्राजेज

झाँसी. 7007122381

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
ग्वालियर रोड, झाँसी 284 003 (उत्तर प्रदेश) भारत
Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University
Gwalior Road, Jhansi 284 003 (U.P.) India

डॉ. अशोक कुमार सिंह
कुलपति
Dr. Ashok Kumar Singh
Vice-Chancellor

Phone : 0510-2730777
E-mail : vcrlbcau@gmail.com
: vc.rlbcau@gov.in
Website : www.rlbcau.ac.in

प्राक्कथन

"राम–वन" रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी परिसर में विकसित एक महत्वपूर्ण एवं अभिनव पर्यावरणीय स्थल है, जो भारतीय संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल से वनों का भारतीय समाज और जीवन–पद्धति में विशेष महत्व रहा है, और "राम–वन" उसी परंपरा का आधुनिक एवं व्यावहारिक रूप है। यह स्थल जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन तथा शैक्षणिक अनुसंधान को एक साथ साकार करता है।

वर्तमान समय में बढ़ती पर्यावरणीय चुनौतियों और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को देखते हुए ऐसे समग्र एवं थीम आधारित हरित स्थलों की अत्यंत आवश्यकता है। "राम–वन" में विकसित हरिशंकरी, पंचवटी, नवग्रह, राशि, सप्तऋषि, नक्षत्र, नंदन वन तथा चरक वाटिकाएँ भारतीय सांस्कृतिक विरासत, आयुर्वेद, ज्योतिष और वनस्पति विज्ञान को व्यवहारिक रूप में समझने का अवसर प्रदान करती हैं। यह परिसर विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और आम जन के लिए एक जीवंत प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रहा है।

यद्यपि "राम–वन" का शैक्षणिक एवं पर्यावरणीय महत्व अत्यंत व्यापक है, तथापि इस विषय पर सुव्यवस्थित साहित्य सीमित रूप में उपलब्ध है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा "राम–वन" से संबंधित जानकारियों को एक पुस्तक के रूप में संकलित किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं पर्यावरण प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं इस सराहनीय प्रयास के लिए समस्त लेखकगण को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(अशोक कुमार सिंह)

प्रस्तावना

''राम–वन'' का भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं प्रकृति संरक्षण से अटूट संबंध है। ''राम–वन'' केवल एक हरित क्षेत्र नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण का जीवंत प्रतीक है। यह वन उस अवधारणा को साकार करता है, जिसमें प्रकृति को जीवन का आधार, गुरु और संरक्षक माना गया है। भारतीय परंपरा में वनों को न केवल जैविक संसाधन के रूप में, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। इसी भावना को केंद्र में रखकर रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी परिसर में "राम–वन" का विकास किया गया है।

''राम–वन'' को एक ऐसी समग्र पर्यावरणीय इकाई के रूप में स्थापित किया गया है, जहाँ शैक्षणिक, शोध एवं सामाजिक उद्देश्यों का संतुलित समावेश है। यह स्थल शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्र की पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है, ताकि स्थानीय जलवायु, मृदा संरक्षण एवं जैव विविधता संवर्धन में योगदान दिया जा सके। ''राम–वन'' में विकसित विभिन्न थीम आधारित वाटिकाएँ–हरिशंकरी, पंचवटी, नवग्रह, राशि, सप्तऋषि, नक्षत्र, नंदन वन तथा चरक वाटिका–भारतीय संस्कृति, आयुर्वेद, ज्योतिष और वनस्पति विज्ञान के गहन एवं व्यवहारिक अध्ययन का अवसर प्रदान करती हैं।

वर्तमान समय में हिंदी भाषा में ऐसे समन्वित, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरणीय स्थलों पर सुव्यवस्थित साहित्य की कमी स्पष्ट रूप से अनुभव की जाती है। उपलब्ध जानकारी प्रायः बिखरी हुई है तथा सामान्य पाठकों और विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ नहीं है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत ग्रंथ में ''राम–वन'' से संबंधित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अवधारणा, संरचना, पौध चयन, पर्यावरणीय महत्व, शैक्षणिक उपयोगिता तथा भविष्य की संभावनाओं को सरल एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

''राम–वन'' के संरक्षण, विस्तार एवं शैक्षणिक उपयोग को बढ़ावा देना वर्तमान समय की महती आवश्यकता है, जिससे यह स्थल पर्यावरणीय शिक्षा, अनुसंधान तथा सतत् विकास का स्थायी केंद्र बन सके। हम सभी लेखकगण आशा करते हैं कि यह पुस्तक वैज्ञानिकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं पर्यावरण प्रेमी पाठकों को राम–वन के विभिन्न आयामों को समझने में सहायक सिद्ध होगी तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करेगी।

– लेखकगण

विषय-वस्तु

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	''राम–वन'' एक परिचय	1
2.	हरिशंकरी वाटिका	3
3.	पंचवटी वाटिका	6
4.	नवग्रह वाटिका	11
5.	राशि वाटिका	16
6.	सप्तऋषि वाटिका	22
7.	नक्षत्र वाटिका	27
8.	चरक वाटिका	40
9.	नंदन वन	48
10.	निष्कर्ष	57

राम वन
राम वन
राम वन
राम वन

''राम-वन'': एक परिचय

''राम–वन'' एक अभिनव एवं बहुआयामी हरित परिसर है, जो प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण शिक्षा तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत के समन्वय का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह स्थल केवल एक वन क्षेत्र नहीं, बल्कि जैव विविधता, शैक्षणिक अनुसंधान और सांस्कृतिक चेतना का समृद्ध केंद्र है। ''राम–वन'' का विकास इस उद्देश्य से किया गया है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए भावी पीढ़ियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाया जा सके।

जैविक दृष्टि से ''राम–वन'' में देशी एवं औषधीय पौधों, वृक्षों, झाड़ियों और घास प्रजातियों का सुव्यवस्थित रोपण किया गया है। यहाँ नक्षत्र वाटिका, नवग्रह वाटिका, हरिशंकरी वाटिका, औषधीय वाटिका तथा अन्य थीम आधारित हरित क्षेत्र जैव विविधता के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सभी घटक स्थानीय पारिस्थितिकी को सुदृढ़ करने के साथ–साथ मृदा संरक्षण, जल संरक्षण और जलवायु संतुलन में भी सहायक हैं।

शैक्षणिक एवं शोध के दृष्टिकोण से ''राम–वन'' छात्रों, शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए एक खुली प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। यहाँ वानिकी, वनस्पति विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, आयुर्वेद तथा सतत् विकास से जुड़े विषयों पर अध्ययन, प्रायोगिक प्रशिक्षण और शोध कार्य किए जाते हैं। यह स्थल सैद्धांतिक (Theoretical) ज्ञान को व्यावहारिक अनुभव से जोड़ने का प्रभावी माध्यम प्रदान करता है।

सांस्कृतिक रूप से ''राम–वन'' भारतीय परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और प्रकृति–पूजन की भावना को सजीव करता है। रामायण से जुड़ी नैतिक शिक्षाएँ, वृक्षों का सांस्कृतिक महत्व और मानव–प्रकृति संबंध का दर्शन इस वन को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। इस प्रकार ''राम–वन'' एक ऐसा समन्वित शोध एवं शिक्षण स्थल है, जो पारिस्थितिक संतुलन, शैक्षणिक विकास और सांस्कृतिक मूल्यों को एक साथ जोड़ता है।

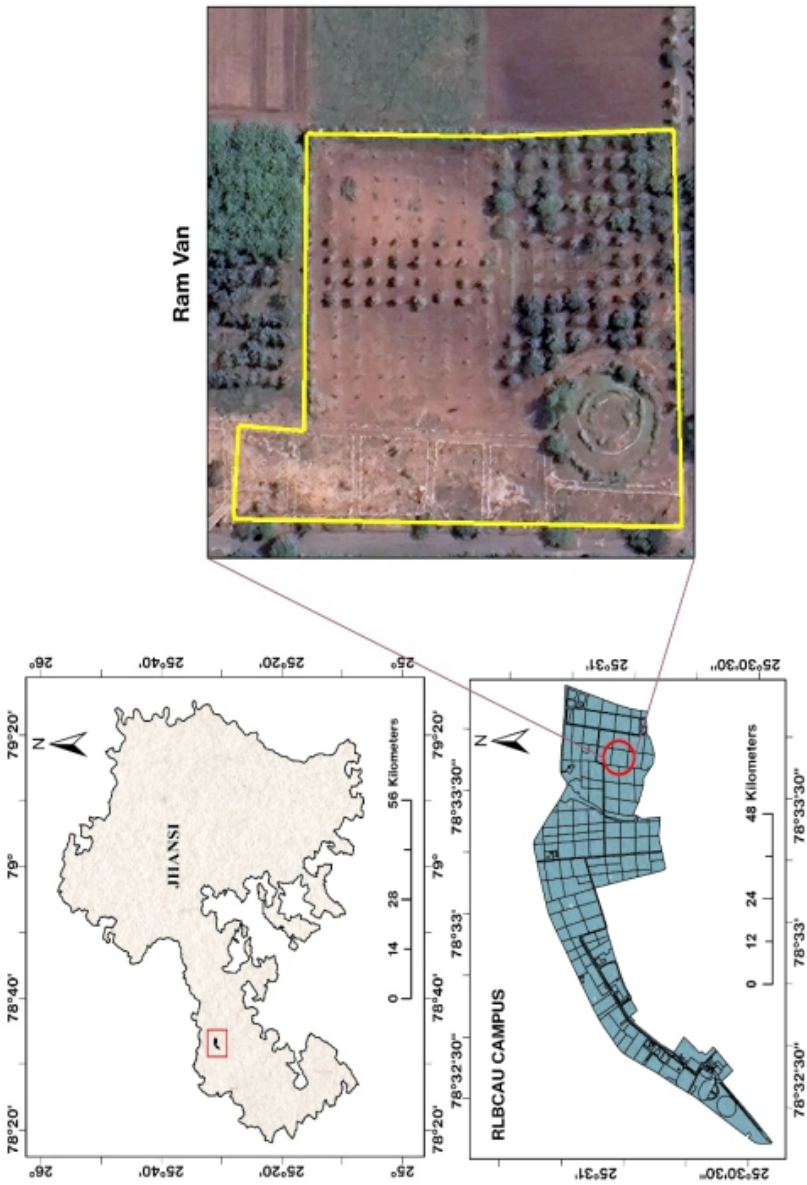

''राम-वन'' अध्ययन एवं संरक्षण क्षेत्र

हरिशंकरी वाटिका

परिचय

हरिशंकरी वाटिका भारतीय परंपरा, पर्यावरण संरक्षण और धार्मिक आस्था का सुंदर समन्वय है। 'हरिशंकरी' शब्द दो महान देवताओं—हरि (भगवान विष्णु) और शंकर (भगवान शिव)—के नामों से मिलकर बना है। इस वाटिका में सामान्यतः तीन पवित्र वृक्षों—पीपल (*Ficus religiosa*), बरगद (*Ficus benghalensis*) और पाकड़ (*Ficus virens*)—को एक साथ रोपा जाता है। यह परंपरा प्रकृति संरक्षण के साथ—साथ धार्मिक, सामाजिक एवं औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

हरिशंकरी वाटिका की संरचना

हरिशंकरी वाटिका में प्रायः पीपल को मध्य में तथा उसके समीप बरगद और पाकड़ का रोपण किया जाता है। कई क्षेत्रों में इन वृक्षों को त्रिकोणीय अथवा वृत्ताकार स्वरूप में लगाया जाता है। समय के साथ ये वृक्ष एक—दूसरे के सहारे विकसित होकर घना, शीतल एवं प्राकृतिक छायादार परिसर निर्मित करते हैं।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

हिंदू धर्म में पीपल को भगवान विष्णु का, बरगद को भगवान शिव का तथा पाकड़ को स्थायित्व, दीर्घायु और प्रकृति की निरंतरता का प्रतीक माना जाता है। ग्रामीण समाज में हरिशंकरी वाटिका को पवित्र स्थल के रूप में सम्मान प्राप्त है, जहाँ पूजा—अर्चना एवं सामाजिक अनुष्ठान किए जाते हैं। यह परंपरा लोगों में वृक्षों के प्रति श्रद्धा और संरक्षण की भावना को सुदृढ़ करती है।

पर्यावरणीय महत्व

- हरिशंकरी वाटिका पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत लाभकारी है।
- पीपल, बरगद और पाकड़ तीनों वृक्ष अधिक मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।
- पाकड़ वायु शुद्धिकरण में सहायक तथा स्थानीय जलवायु को संतुलित करता है।
- यह वाटिका जैव विविधता को बढ़ावा देती है और पक्षियों, कीटों व वन्य जीवों को आश्रय प्रदान करती है।
- वृक्षों की मजबूत जड़ें भूमि कटाव रोकने और मृदा संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

औषधीय एवं सामाजिक उपयोगिता

पीपल, बरगद और पाकड़–तीनों वृक्ष औषधीय गुणों से युक्त हैं। पाकड़ की छाल और पत्तियों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में सूजन, त्वचा रोग एवं अन्य उपचारों में किया जाता है, जबकि पीपल और बरगद आयुर्वेद में विविध रोगों के उपचार में प्रयुक्त होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में हरिशंकरी वाटिका सामुदायिक बैठकों, विश्राम स्थल और सामाजिक मेल–मिलाप का प्रमुख केंद्र भी बनती है।

1. पीपल

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa*

कुलः Moraceae

महत्त्वः पीपल का वृक्ष हरिशंकरी वाटिका का एक प्रमुख एवं पवित्र घटक है। इसे धार्मिक, पर्यावरणीय तथा औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। हिंदू धर्म में पीपल को भगवान विष्णु एवं श्रीकृष्ण से जोड़ा जाता है तथा बौद्ध धर्म में इसी वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। पर्यावरण की दृष्टि से पीपल वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर अधिक मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है, जिससे वायु शुद्ध रहती है। इसकी छाया ठंडी एवं घनी होती है, जो जैव विविधता को आश्रय देती है। औषधीय रूप से पीपल की छाल, पत्तियाँ और फल दमा, खांसी, मधुमेह, घाव एवं पाचन रोगों में उपयोगी हैं। यह वृक्ष मृदा संरक्षण में भी सहायक है और ग्रामीण जीवन में सामाजिक मिलन स्थल के रूप में कार्य करता है।

2. बरगद

वैज्ञानिक नामः *Ficus benghalensis*

कुलः Moraceae

महत्त्वः बरगद को हरिशंकरी वाटिका में शिव का प्रतीक माना जाता है और यह दीर्घायु, स्थायित्व तथा संरक्षण का प्रतीक है। इसका विशाल आकार और फैलाव इसे प्राकृतिक छाया गृह बनाता है,

जहाँ अनेक पक्षी, कीट और जीव निवास करते हैं। इसकी हवाई जड़ें मिट्टी में उतरकर वृक्ष को और अधिक सुदृढ़ बनाती हैं, जिससे यह पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बरगद वायु शोधन में सहायक है और शहरी प्रदूषण को कम करने में उपयोगी सिद्ध होता है। आयुर्वेद में इसकी छाल, दूध (लेटेक्स) और पत्तियाँ दांतों, घावों, त्वचा रोगों और मधुमेह के उपचार में प्रयुक्त होती हैं। सामाजिक रूप से बरगद का वृक्ष पंचायत, सभा एवं विश्राम स्थल के रूप में भी प्राचीन काल से महत्वपूर्ण रहा है।

3. पाकड़

वैज्ञानिक नामः *Ficus virens*

कुलः Moraceae

महत्त्वः हरिशंकरी वाटिका में पाकड़ का विशेष महत्व है क्योंकि यह तेजी से बढ़ने वाला, घनी छाया देने वाला और पर्यावरणीय संतुलन बनाने वाला वृक्ष है। इसकी चौड़ी छतरीनुमा छत्रक (बंदवचल) गर्मी में ठंडक देती है और परिसर को प्राकृतिक "विश्राम स्थल" बनाती है। पाकड़ की मजबूत जड़ें मिट्टी को बाँधकर कटाव रोकती हैं तथा भूमि संरक्षण में सहायक होती हैं। इसके फल (अंजीर जैसे) पक्षियों और छोटे जीवों का भोजन बनते हैं, जिससे जैव विविधता बढ़ती है। यह वृक्ष वायु में धूल–कणों को पकड़ने और स्थानीय माइक्रोक्लाइमेट सुधारने में मदद करता है। पारंपरिक चिकित्सा में इसकी छाल/पत्तियों का उपयोग कुछ त्वचा व सूजन संबंधी समस्याओं में किया जाता रहा है। इसलिए हरिशंकरी वाटिका में पाकड़, पीपल और बरगद के साथ मिलकर एक टिकाऊ, छायादार और जीवनदायी हरित परिसर बनाता है।

पंचवटी वाटिका

परिचय

पंचवटी वाटिका भारतीय संस्कृति, धर्म और प्रकृति के समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। 'पंचवटी' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। पंच अर्थात पाँच और वटी अर्थात वृक्षों का समूह या उपवन। अर्थात वह पवित्र उपवन जहाँ पाँच विशेष वृक्षों का संरक्षण और पूजन किया जाता है। पंचवटी का उल्लेख प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विशेषकर रामायण में मिलता है। यह वही पावन स्थल माना जाता है जहाँ भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास का एक महत्वपूर्ण समय व्यतीत किया था।

पंचवटी वाटिका के पाँच पवित्र वृक्ष

पंचवटी वाटिका में सामान्यतः निम्नलिखित पाँच वृक्षों का रोपण किया जाता है, जिनका धार्मिक, औषधीय एवं पर्यावरणीय महत्व है :

1. बरगद (वट वृक्ष – *Ficus benghalensis*)

यह दीर्घायु, स्थायित्व और संरक्षण का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में इसे अमरता एवं ज्ञान का प्रतीक माना गया है।

2. पीपल (*Ficus religiosa*)

पीपल को पवित्र वृक्ष माना जाता है। यह अधिक मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. नीम (*Azadirachta indica*)

नीम अपने औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध है। यह वातावरण को शुद्ध करता है और अनेक रोगों की रोकथाम में सहायक है।

4. आँवला (*Phyllanthus emblica*)

आयुर्वेद में आँवला को अमृत तुल्य माना गया है। यह पोषण और स्वास्थ्य का प्रतीक है।

5. अशोक (*Saraca asoca*)

अशोक वृक्ष दुःख नाशक माना जाता है और सौंदर्य व शांति का प्रतीक है।

पंचवटी वाटिका का महत्व

पंचवटी वाटिका का महत्व केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। यह वाटिका जैव विविधता संरक्षण, जलवायु संतुलन और हरित वातावरण बनाए रखने में सहायक होती है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पंचवटी वाटिका लोगों को प्रकृति से जोड़ने का कार्य करती है।

पर्यावरणीय एवं सामाजिक लाभ

- वायु शुद्धिकरण और तापमान नियंत्रण
- औषधीय पौधों की उपलब्धता
- पक्षियों और अन्य जीवों के लिए आश्रय
- मानसिक शांति एवं ध्यान के लिए उपयुक्त वातावरण
- धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का संरक्षण

1. बेल (उत्तर दिशा)

वैज्ञानिक नामः *Aegle marmeloss*

कुलः Rutaceae

महत्वः बेल पंचवटी वाटिका का अत्यंत पवित्र और उपयोगी वृक्ष है। यह भगवान शिव को अर्पित किया जाने वाला प्रमुख वृक्ष माना जाता है, इसलिए धार्मिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। बेल का फल

औषधीय गुणों से भरपूर होता है और आयुर्वेद में इसे पाचन तंत्र के लिए श्रेष्ठ माना गया है। यह दस्त, पेचिश, कब्ज और आंतों से संबंधित रोगों में लाभकारी है। बेल की पत्तियाँ, जड़ और छाल भी औषधीय उपयोग में आती हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से बेल वृक्ष शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भी अच्छी तरह उगता है तथा मृदा संरक्षण में सहायक होता है। इसके फल, पत्तियाँ और छाया पंचवटी वाटिका को धार्मिक, औषधीय और पारिस्थितिक रूप से समृद्ध बनाते हैं।

2. आँवला (दक्षिण दिशा)

वैज्ञानिक नामः *Embilica officinalis*

कुलः Phyllanthaceae

महत्वः आँवला पंचवटी वाटिका का एक प्रमुख औषधीय वृक्ष है। इसे आयुर्वेद में "अमृत फल" कहा गया है क्योंकि इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन–C पाया जाता है। आँवला रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, पाचन सुधारने और शरीर को युवा बनाए रखने में सहायक है। यह त्रिफला चूर्ण का मुख्य घटक है और बाल, त्वचा तथा आँखों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। धार्मिक रूप से भी आँवला पूजनीय है और कई व्रत–उपवासों में इसका महत्व बताया गया है। पर्यावरण की दृष्टि से आँवला वृक्ष मध्यम आकार का होता है, जो पक्षियों को आश्रय और फल प्रदान करता है। पंचवटी वाटिका में आँवला स्वास्थ्य, संस्कृति और जैव विविधता का प्रतीक है।

3. पीपल (पूर्व दिशा)

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa*

कुलः Moraceae

महत्वः पीपल को भारतीय संस्कृति में अत्यंत पवित्र वृक्ष माना गया है। पंचवटी वाटिका में इसका विशेष स्थान है क्योंकि इसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार पीपल की पूजा करने से मानसिक शांति और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

पर्यावरणीय दृष्टि से पीपल एक उत्कृष्ट वृक्ष है, जो अधिक मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है और वायु शुद्धिकरण में सहायक होता है। इसकी छाया घनी होती है, जिससे तापमान नियंत्रित रहता है। आयुर्वेद में इसकी छाल, पत्तियाँ और फल विभिन्न रोगों के उपचार में प्रयुक्त होते हैं। पंचवटी वाटिका में पीपल धार्मिक, औषधीय और पर्यावरणीय संतुलन का प्रमुख आधार है।

4. बरगद (पश्चिम दिशा)

वैज्ञानिक नामः *Ficus benghalensis*

कुलः Moraceae

महत्वः बरगद को "वटवृक्ष" भी कहा जाता है और इसे दीर्घायु तथा स्थायित्व का प्रतीक माना जाता है। पंचवटी वाटिका में बरगद सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसकी विशाल छत्राकार संरचना अनेक जीव–जंतुओं और पक्षियों को आश्रय प्रदान करती है। आयुर्वेद में बरगद की जड़, छाल और दूध का उपयोग मधुमेह, त्वचा रोग और दाँतों की समस्याओं में किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार वट सावित्री व्रत में इसकी पूजा की जाती है। पर्यावरणीय रूप से यह वृक्ष कार्बन अवशोषण, मृदा संरक्षण और जैव विविधता बढ़ाने में सहायक है। पंचवटी वाटिका में बरगद जीवन और संरक्षण का प्रतीक है।

5. अशोक (दक्षिण-पूर्व दिशा)

वैज्ञानिक नामः *Saraca asoca*

कुलः Fabaceae

महत्वः अशोक वृक्ष को शोक हरने वाला वृक्ष माना जाता है और इसका उल्लेख रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। पंचवटी वाटिका में अशोक सौंदर्य, शांति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। इसके सुंदर लाल–नारंगी पुष्प वातावरण को आकर्षक बनाते हैं। आयुर्वेद में अशोक की छाल स्त्री रोगों, विशेषकर मासिक धर्म संबंधी समस्याओं के उपचार में अत्यंत उपयोगी मानी जाती है। यह वृक्ष पर्यावरण

की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हरियाली बढ़ाता है और जैव विविधता को समर्थन देता है। पंचवटी वाटिका में अशोक धार्मिक, औषधीय और सौंदर्यात्मक महत्व का समन्वय प्रस्तुत करता है।

नवग्रह वाटिका

परिचय

नवग्रह वाटिका भारतीय संस्कृति, ज्योतिष और आयुर्वेद का एक समन्वित स्वरूप है। "नवग्रह" का अर्थ है नौ ग्रह–सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु। परंपरागत मान्यता के अनुसार प्रत्येक ग्रह का संबंध एक विशेष पौधे से होता है। इन पौधों को वैज्ञानिक, औषधीय, धार्मिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। नवग्रह वाटिका में इन नौ ग्रहों से संबंधित पौधों को एक निश्चित क्रम एवं दिशा में रोपित किया जाता है, जिससे सकारात्मक ऊर्जा, मानसिक शांति एवं पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।

रोपण व्यवस्था एवं डिजाइन

- नवग्रह वाटिका सामान्यतः वृत्ताकार या चौकोर आकार में विकसित की जाती है।
- केंद्र में सूर्य से संबंधित पौधा (अर्क) लगाया जाता है।

- शेष ग्रहों के पौधे दिशानुसार एवं निश्चित दूरी पर लगाए जाते हैं।
- राहु और केतु से संबंधित पौधे प्रायः घास वर्ग के होते हैं, जिन्हें सीमाओं या चारों ओर लगाया जा सकता है।
- प्रत्येक पौधे के पास नाम पट्टिका (हिंदी/संस्कृत/वैज्ञानिक नाम) लगाई जाती है।

नवग्रह वाटिका का महत्व

1. **धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व** – पूजा–पाठ, ग्रह शांति एवं ध्यान के लिए उपयुक्त।
2. **औषधीय महत्व** – अधिकांश पौधे आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर हैं।
3. **पर्यावरणीय महत्व** – जैव विविधता संरक्षण, हरियाली एवं सूक्ष्म जलवायु सुधार।
4. **शैक्षणिक महत्व** – विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों में शिक्षण हेतु उपयोगी।
5. **सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व** – भारतीय परंपरा और प्रकृति के बीच सामंजस्य को दर्शाती है।

नवग्रह वाटिका में पाए जाने वाले प्रमुख पौधे

1. अर्क (सूर्य ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Calotropis procera*

कुलः Apocynaceae

सामान्य नामः आक, मदार

महत्वः अर्क नवग्रह वाटिका में सूर्य ग्रह का प्रतिनिधि पौधा माना जाता है। यह पौधा ऊष्मा, ऊर्जा और जीवन शक्ति का प्रतीक है। आयुर्वेद में इसके पत्ते, जड़ और दूध (क्षीर) का उपयोग वात, कफ रोग, त्वचा रोग तथा सूजन में किया जाता है। यह शुष्क एवं बंजर भूमि में भी आसानी से उग जाता है, जिससे भूमि संरक्षण में सहायक होता है। इसकी गहरी जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं। धार्मिक दृष्टि से अर्क का प्रयोग सूर्योपासना एवं हवन कर्मों में किया जाता है।

2. पलाश (चँद्र ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Butea monosperma*

कुलः Fabaceae

सामान्य नामः ढाक, टेसू

महत्वः पलाश को नवग्रह वाटिका में मंगल ग्रह से जोड़ा जाता है। यह शक्ति, साहस एवं ऊर्जा का प्रतीक है। इसके फूल प्राकृतिक रंग (टेसू रंग) बनाने मेंउपयोगी हैं। आयुर्वेद में पलाश के बीज, छाल और फूल कृमिनाशक, मूत्रविकार तथा त्वचा रोगों में प्रयुक्त होते हैं। यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है। वनों एवं कृषि–वानिकी प्रणालियों में पलाश एक महत्वपूर्ण बहुउपयोगी वृक्ष है।

3. अपामार्ग (बुध ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Achyranthes aspera*

कुलः Amaranthaceae

सामान्य नामः चिरचिटा, लटजीरा

महत्वः अपामार्ग को नवग्रह वाटिका में राहु ग्रह का प्रतीक माना जाता है। यह औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पौधा है। आयुर्वेद में इसका उपयोग दमा, खाँसी, मूत्ररोग, कृमि एवं दंत रोगों में किया जाता है। यह पौधा कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहता है, जो सहनशीलता का प्रतीक है। इसकी जड़ें और बीज पंचकर्म चिकित्सा में प्रयुक्त होते हैं। यह पारंपरिक औषधीय ज्ञान का महत्वपूर्ण घटक है।

4. गूलर (शुक्र ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Ficus racemosa*

कुलः Moraceae

सामान्य नामः उदुम्बर, गूलर

महत्वः गूलर को नवग्रह वाटिका में बृहस्पति ग्रह से जोड़ा जाता है। यह ज्ञान, समृद्धि और स्थायित्व

का प्रतीक है। इसके फल, छाल और पत्तियाँ आयुर्वेद में मधुमेह, अतिसार और रक्त विकारों में उपयोगी हैं। गूलर एक उत्कृष्ट छायादार वृक्ष है और जैव विविधता संरक्षण में सहायक है। इसके फल अनेक पक्षियों और जीवों के लिए आहार का स्रोत हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है।

5. खैर (मंगल ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Acacia catechu*

कुलः Fabaceae

महत्वः खैर को नवग्रह वाटिका में शनि ग्रह का प्रतिनिधि माना जाता है। यह कठोरता, अनुशासन और सहनशीलता का प्रतीक है। खैर से प्राप्त कत्था औषधीय एवं औद्योगिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद में इसका उपयोग मुख रोग, दस्त और रक्तस्राव में किया जाता है। यह शुष्क क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि करता है और मृदा संरक्षण में सहायक है। खैर लकड़ी एवं गैर–काष्ठ वन उपज दोनों दृष्टियों से उपयोगी वृक्ष है।

6. पीपल (बृहस्पति ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa*

कुलः Moraceae

सामान्य नामः पीपल

महत्वः पीपल नवग्रह वाटिका में गुरु एवं सूर्य तत्व से जुड़ा माना जाता है। यह दीर्घायु, ज्ञान और पवित्रता का प्रतीक है। पीपल अधिक मात्रा में ऑक्सीजन उत्सर्जन के लिए प्रसिद्ध है। आयुर्वेद में इसकी छाल, पत्ते और फल हृदय, त्वचा एवं श्वसन रोगों में उपयोगी हैं। धार्मिक दृष्टि से पीपल की पूजा की जाती है। यह पर्यावरण संरक्षण और वायुमंडलीय शुद्धता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. शमी (शनि ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Prosopis cineraria*

कुलः Fabaceae

सामान्य नामः खेजड़ी, शमी

महत्वः शमी वृक्ष को नवग्रह वाटिका में मंगल ग्रह से भी जोड़ा जाता है और यह विजय व साहस का प्रतीक है। यह मरुस्थलीय एवं शुष्क क्षेत्रों का जीवनदायी वृक्ष है। शमी की पत्तियाँ और फल पशुओं के लिए उत्तम चारा हैं। आयुर्वेद में इसका उपयोग ज्वर, घाव और पाचन विकारों में किया जाता है। इसकी गहरी जड़ें मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती हैं और मरुस्थलीकरण रोकने में सहायक हैं।

8. दूब घास (राहु ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Cynodon dactylon*

कुलः Poaceae

महत्वः दूब घास को नवग्रह वाटिका में बुध ग्रह का प्रतीक माना जाता है। यह बुद्धि, चपलता और हरियाली का प्रतीक है। आयुर्वेद में दूब घास का उपयोग रक्तस्राव, घाव भरने और मूत्र रोगों में किया जाता है। यह तेजी से फैलने वाली घास है, जो मृदा अपरदन को रोकती है। धार्मिक अनुष्ठानों, विशेषकर गणेश पूजा में दूब का विशेष महत्व है। यह पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत उपयोगी पौधा है।

9. कुशा घास (केतु ग्रह)

वैज्ञानिक नामः *Desmostachya bipinnata*

कुलः Poaceae

सामान्य नामः कुश, कुशा

महत्वः कुशा घास को नवग्रह वाटिका में केतु ग्रह से जोड़ा जाता है। यह पवित्रता, तप और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक है। वैदिक कर्मकांड, यज्ञ और संस्कारों में कुशा का विशेष उपयोग होता है। आयुर्वेद में कुशा का प्रयोग मूत्र विकार, ज्वर और सूजन में किया जाता है। यह शुष्क भूमि में भी उगने वाली घास है और मृदा संरक्षण में सहायक है। कुशा घास भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग है।

राशि वाटिका

परिचय

राशि वाटिका एक विशिष्ट प्रकार की विषय–आधारित (Thematic) एवं ज्योतिषीय अवधारणा पर आधारित उद्यान है, जिसमें बारह राशियों (मेष से मीन) से संबंधित वृक्ष, पौधे, लताएँ एवं औषधीय वनस्पतियाँ वैज्ञानिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक आधार पर रोपी जाती हैं। यह वाटिका न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि भारतीय ज्योतिष, आयुर्वेद एवं पारंपरिक ज्ञान को भी जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करती है।

राशि वाटिका की अवधारणा

भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक राशि का संबंध किसी न किसी ग्रह, वृक्ष या औषधीय पौधे से होता है। राशि वाटिका में प्रत्येक राशि के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र निर्धारित किया जाता है, जहाँ उस राशि से जुड़े पौधों का रोपण किया जाता है। मान्यता है कि अपनी राशि से संबंधित पौधों का रोपण, संरक्षण एवं उपयोग करने से सकारात्मक ऊर्जा, मानसिक शांति एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं।

राशि वाटिका का विन्यास (Layout)

राशि वाटिका को प्रायः वृत्ताकार या अर्धवृत्ताकार स्वरूप में विकसित किया जाता है, जिसमें केंद्र में सूर्य या नवग्रह का प्रतीक स्थापित किया जाता है। इसके चारों ओर बारह खंड बनाए जाते हैं, प्रत्येक खंड एक राशि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक खंड में संबंधित राशि का नाम, चिन्ह, ग्रह, वृक्ष/पौधे का वैज्ञानिक एवं स्थानीय नाम, तथा उनके उपयोग संबंधी जानकारी प्रदर्शित की जाती है।

राशि वाटिका का महत्व

1. **पर्यावरणीय महत्व** – हरित आवरण में वृद्धि, जैव विविधता संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण।
2. **शैक्षणिक महत्व** – विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए ज्योतिष, आयुर्वेद एवं वनस्पति विज्ञान का जीवंत प्रयोगशाला।
3. **सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व** – भारतीय परंपराओं, ग्रह–नक्षत्र विश्वासों एवं धार्मिक आस्थाओं का संरक्षण।
4. **स्वास्थ्य एवं मानसिक लाभ** – औषधीय पौधों से स्वास्थ्य लाभ तथा सकारात्मक मानसिक प्रभाव।

राशि वाटिका में पाए जाने वाले प्रमुख पौधे

1. रक्त चंदन (मेष राशि)

वैज्ञानिक नामः *Pterocarpus santalinus*

कुलः Fabaceae

महत्वः रक्त चंदन एक पवित्र एवं दुर्लभ वृक्ष है, जिसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, तिलक और यज्ञ में किया जाता है। आयुर्वेद में यह त्वचा रोग, सूजन, रक्त विकार और ज्वर के उपचार में उपयोगी माना गया है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह मृदा संरक्षण में सहायक तथा सूक्ष्म जीवों के लिए उपयोगी है। शैक्षणिक रूप से यह औषधीय वानिकी और संरक्षण अध्ययन का महत्त्वपूर्ण विषय है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से यह शुभता, शुद्धता और पारंपरिक औषधि ज्ञान का प्रतीक है।

2. बाँस (वृषभ राशि)

वैज्ञानिक नामः *Bambusa bambos*

कुलः Poaceae

महत्वः बाँस को "गरीबों की लकडी" कहा जाता है। आध्यात्मिक रूप से यह सरलता और लचीलापन दर्शाता है। औषधीय रूप में इसके अंकुर पाचन के लिए लाभकारी होते हैं।

पर्यावरणीय रूप से बाँस तीव्र गति से बढ़कर कार्बन अवशोषण, मृदा संरक्षण और जैव विविधता को बढ़ाता है। शैक्षणिक दृष्टि से यह कृषिवानिकी का सतत् विकास और ग्रामीण आजीविका का प्रमुख उदाहरण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से बाँस का उपयोग घर, टोकरी, वाद्य यंत्र, त्योहारों और पारंपरिक शिल्प में व्यापक है।

3. कदम्ब (मिथुन राशि)

वैज्ञानिक नामः *Neolamarckia cadamba*

कुलः Rubiaceae

महत्वः कदम्ब वृक्ष का गहरा आध्यात्मिक महत्व है, विशेषकर भगवान श्रीकृष्ण से इसका संबंध माना जाता है। आयुर्वेद में इसकी छाल और पत्तियाँ ज्वर, सूजन और त्वचा रोगों में उपयोगी हैं। पर्यावरणीय रूप से यह छायादार वृक्ष है, जो पक्षियों और कीटों को आश्रय देता है। शैक्षणिक रूप से यह पौराणिक वनस्पति और औषधीय अध्ययन में सहायक है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से कदम्ब भारतीय साहित्य, लोककथाओं और मंदिर परिसरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

4. पलाश (कर्क राशि)

वैज्ञानिक नामः *Butea monosperma*

कुलः Fabaceae

महत्वः पलाश को पवित्र वृक्ष माना जाता है और यज्ञ व हवन में इसकी लकड़ी प्रयुक्त होती है। आयुर्वेद में इसके फूल, बीज और छाल कृमिनाशक, मधुमेह और त्वचा रोगों में उपयोगी हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से यह शुष्क क्षेत्रों में पनपकर मृदा उर्वरता बढ़ाता है। शैक्षणिक रूप से यह कृषिवानिकी और देशी प्रजाति संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है सामाजिक– सांस्कृतिक रूप से पलाश के फूल होली के प्राकृतिक रंगों में प्रयोग होते हैं।

5. बेर (सिंह राशि)

वैज्ञानिक नामः *Ziziphus mauritiana*

कुलः Rhamnaceae

महत्वः बेर का धार्मिक महत्व व्रत–पूजन और लोक परंपराओं में है। इसके फल पौष्टिक और पाचन में सहायक होते हैं। आयुर्वेद में यह बलवर्धक और रक्तशोधक माना गया है। पर्यावरणीय रूप से यह सूखा–रोधी वृक्ष है, जो कम जल में भी जीवित रहता है। शैक्षणिक दृष्टि से यह शुष्क भूमि बागवानी का उदाहरण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से बेर ग्रामीण आहार, लोकगीतों और पारंपरिक जीवनशैली का अभिन्न अंग है।

6. आम (कन्या राशि)

वैज्ञानिक नामः *Mangifera indica*

कुलः Anacardiaceae

महत्वः आम को "फलों का राजा" कहा जाता है और यह धार्मिक अनुष्ठानों में पत्तियों की बंदनवार के रूप में प्रयुक्त होता है। आयुर्वेद में आम फल, बीज और छाल औषधीय गुणों से भरपूर हैं। पर्यावरणीय रूप से यह बड़ा छायादार वृक्ष है, जो जैव विविधता को बढ़ावा देता है। शैक्षणिक रूप से यह उद्यानिकी और पौध प्रजनन अध्ययन में महत्वपूर्ण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से आम भारतीय संस्कृति, त्योहारों और खान–पान का प्रमुख प्रतीक है।

7. जामुन (तुला राशि)

वैज्ञानिक नामः *Syzygium cumini*

कुलः Myrtaceae

महत्वः जामुन का आध्यात्मिक संबंध आयुर्वेदिक चिकित्सा और प्राकृतिक स्वास्थ्य से है। इसके बीज मधुमेह नियंत्रण में अत्यंत उपयोगी माने जाते हैं। फल रक्तवर्धक और पाचन में सहायक है।

पर्यावरणीय रूप से यह नदी किनारे और शहरी क्षेत्रों में उपयोगी–छायादार वृक्ष है। शैक्षणिक दृष्टि से यह औषधीय पौधों के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से जामुन पारंपरिक चिकित्सा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और मौसमी फलों में विशेष स्थान रखता है।

8. खैर (वृश्चिक राशि)

वैज्ञानिक नामः *Acacia catechu*

कुलः Fabaceae

महत्वः खैर का धार्मिक उपयोग हवन सामग्री और आयुर्वेदिक औषधियों में होता है। इससे प्राप्त "कत्था" औषधीय और दंत स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता बढ़ाता है। शैक्षणिक रूप से यह औषधीय वानिकी का प्रमुख वृक्ष है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से खैर पान, आयुर्वेद और ग्रामीण उद्योग से जुड़ा हुआ है।

9. पीपल (धनु राशि)

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa*

कुलः Moraceae

महत्वः पीपल को अत्यंत पवित्र वृक्ष माना जाता है और इसकी पूजा की जाती है। आयुर्वेद में इसकी छाल, पत्तियाँ और फल कई रोगों में उपयोगी हैं। पर्यावरणीय रूप से यह अधिक ऑक्सीजन प्रदान करने वाला वृक्ष माना जाता है। शैक्षणिक रूप से यह धार्मिक–पर्यावरणीय अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से पीपल ग्राम चौपाल, मंदिर और लोक आस्था का केंद्र रहा है।

10. अर्जुन (मकर राशि)

वैज्ञानिक नामः *Terminalia arjuna*

कुलः Combretaceae

महत्वः अर्जुन वृक्ष का आध्यात्मिक और औषधीय महत्व विशेष है। आयुर्वेद में इसकी छाल हृदय

रोगों के लिए प्रसिद्ध है। पर्यावरणीय रूप से यह नदी किनारों पर मृदा कटाव रोकता है। शैक्षणिक दृष्टि से यह औषधीय वनस्पति विज्ञान का प्रमुख उदाहरण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से अर्जुन स्वास्थ्य, दीर्घायु और प्राकृतिक चिकित्सा का प्रतीक माना जाता है।

11. शमी (कुम्भ राशि)

वैज्ञानिक नामः *Prosopis cineraria*

कुलः Fabaceae

महत्वः शमी वृक्ष का धार्मिक महत्व अत्यधिक है, विशेषकर दशहरा और रामायण से जुड़ा हुआ। आयुर्वेद में यह ज्वर, सूजन और पाचन विकारों में उपयोगी है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह मरुस्थलीय क्षेत्रों में जीवन रक्षक वृक्ष है। शैक्षणिक रूप से यह रेगिस्तानी पारिस्थितिकी का उत्कृष्ट उदाहरण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से शमी साहस, विजय और संरक्षण का प्रतीक है।

12. वट वृक्ष (मीन राशि)

वैज्ञानिक नामः *Ficus benghalensis*

कुलः Moraceae

महत्वः वट वृक्ष को अमरता और दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। वट सावित्री व्रत में इसका विशेष महत्व है। आयुर्वेद में इसकी जड़, छाल और पत्तियाँ औषधीय हैं। पर्यावरणीय रूप से यह विशाल छाया, पक्षियों का आवास और कार्बन अवशोषण प्रदान करता है। शैक्षणिक रूप से यह पारिस्थितिकी अध्ययन में महत्वपूर्ण है। सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से वट वृक्ष भारतीय परंपरा, परिवार और संरक्षण का प्रतीक है।

सप्तऋषि वाटिका

परिचय

सप्तऋषि वाटिका भारतीय ऋषि–परंपरा, आयुर्वेद और प्रकृति–संरक्षण की भावना पर आधारित एक विशेष औषधीय एवं सांस्कृतिक उद्यान है। "सप्तऋषि" शब्द का अर्थ है–सात महान ऋषि, जिन्होंने वैदिक ज्ञान, चिकित्सा, दर्शन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। यह वाटिका न केवल हरित सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती है।

सप्तऋषियों का परिचय

सप्तऋषि परंपरागत रूप से ये माने जाते हैं–कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ एवं जमदग्नि।

इन ऋषियों ने औषधीय पौधों, वनस्पतियों, जीवन–शैली और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग का मार्गदर्शन दिया।

सप्तऋषि वाटिका की संरचना

सप्तऋषि वाटिका को सामान्यतः सात खंडों में विभाजित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक खंड एक ऋषि को समर्पित होता है। हर खंड में उस ऋषि से संबंधित औषधीय, पौराणिक एवं उपयोगी पौधों का रोपण किया जाता है। पौधों के साथ उनके वैज्ञानिक नाम, औषधीय गुण एवं उपयोग की जानकारी भी प्रदर्शित की जाती है।

प्रमुख औषधीय पौधे

इस वाटिका में सामान्यतः निम्नलिखित पौधे शामिल किए जाते हैं –

अश्वगंधा, ब्राह्मी, शतावरी, तुलसी (श्यामा व रामा), अर्जुन, हरड़, बहेड़ा, आँवला, सदाबहार, सर्पगंधा, गिलोय, कालमेघ, अमलताश आदि। ये पौधे आयुर्वेदिक चिकित्सा, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने एवं स्वास्थ्य संरक्षण में अत्यंत उपयोगी हैं।

उद्देश्य एवं महत्व

- भारतीय ऋषि परंपरा एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण
- औषधीय पौधों का संरक्षण एवं संवर्धन
- विद्यार्थियों, किसानों एवं आम जन को आयुर्वेदिक ज्ञान से परिचित कराना
- पर्यावरण जागरूकता एवं जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना

शैक्षणिक एवं सामाजिक उपयोगिता

सप्तऋषि वाटिका शैक्षणिक संस्थानों, शोध केंद्रों, आश्रमों, मंदिर परिसरों एवं सार्वजनिक उद्यानों में स्थापित की जा सकती है। यह विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं पर्यटकों के लिए जीवंत प्रयोगशाला (Live Laboratory) का कार्य करती है।

1. नीम (भृगु ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Azadirachta indica*

कुलः Meliaceae

महत्वः नीम सप्तऋषि वाटिका का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुउपयोगी वृक्ष है। इसे आयुर्वेद में "सर्वरोगनाशक" कहा गया है। नीम की पत्तियाँ, छाल, बीज एवं तेल औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। यह जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी एवं फफूंदनाशक गुणों से युक्त है, इसलिए त्वचा रोग, दंत रोग, ज्वर तथा रक्तशुद्धि में उपयोगी है। पर्यावरणीय दृष्टि से नीम वायु शुद्धिकरण में सहायक है तथा कीट नियंत्रण में प्राकृतिक भूमिका निभाता है। कृषि में नीम खली जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशक के रूप में प्रयोग होती है। धार्मिक रूप से नीम को शुद्धता और स्वास्थ्य का प्रतीक माना गया है। सप्तऋषि वाटिका में नीम मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण एवं पारंपरिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

2. शमी (अंगिरा ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Prosopis cineraria*

कुलः Fabaceae

महत्वः शमी वृक्ष का भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक परंपराओं में विशेष स्थान है। इसे महाभारत काल

से जोड़ा जाता है और विजय तथा शक्ति का प्रतीक माना गया है। शमी अत्यंत सहनशील वृक्ष है, जो शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगता है। इसकी जड़ें मिट्टी को बांधकर भूमि कटाव को रोकती हैं। शमी की पत्तियाँ एवं फल पशुओं के लिए पौष्टिक चारा हैं। आयुर्वेद में शमी का उपयोग ज्वर, सूजन एवं पाचन रोगों में किया जाता है। यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है। सप्तऋषि वाटिका में शमी वृक्ष सहनशीलता, पर्यावरणीय संतुलन एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

3. अर्जुन (कुत्स ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Terminalia arjuna*

कुलः Combretaceae

महत्वः अर्जुन वृक्ष को आयुर्वेद में हृदय रोगों के लिए अत्यंत लाभकारी माना गया है। इसकी छाल का उपयोग हृदय बलवर्धक औषधियों के निर्माण में किया जाता है। अर्जुन रक्तचाप संतुलन, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण एवं हृदय की मांसपेशियों को मजबूत करने में सहायक है। यह वृक्ष नदियों एवं जलाशयों के किनारे उगकर मृदा संरक्षण करता है। अर्जुन की छाया घनी होती है, जिससे यह तापमान नियंत्रण में सहायक है। धार्मिक रूप से अर्जुन को पवित्र माना गया है। सप्तऋषि वाटिका में अर्जुन स्वास्थ्य, जल संरक्षण एवं औषधीय महत्व का प्रतिनिधि वृक्ष है।

4. बेल (गौतम ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Aegle marmelos*

कुलः Rutaceae

महत्वः बेल वृक्ष का धार्मिक एवं औषधीय दोनों दृष्टियों से विशेष महत्व है। इसके पत्ते भगवान शिव को अर्पित किए जाते हैं। बेल का फल पाचन तंत्र के लिए अत्यंत लाभकारी है और दस्त, पेचिश एवं कब्ज में उपयोगी है। इसकी जड़, छाल एवं पत्तियाँ भी औषधीय गुणों से युक्त होती हैं। बेल वृक्ष सूखा सहनशील होता है और कम देखभाल में भी विकसित हो जाता है। यह पर्यावरणीय दृष्टि से

उपयोगी एवं जैव विविधता को बढ़ावा देने वाला वृक्ष है। सप्तऋषि वाटिका में बेल धार्मिक आस्था, स्वास्थ्य एवं प्रकृति संतुलन का प्रतीक है।

5. तुलसी (कश्यप ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Ocimum sanctum*

कुलः Lamiaceae

महत्वः तुलसी को भारतीय संस्कृति में अत्यंत पवित्र एवं देवी स्वरूप माना गया है। आयुर्वेद में तुलसी को "जीवनदायिनी" कहा गया है। यह सर्दी, खांसी, ज्वर, अस्थमा एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। तुलसी वायुमंडल को शुद्ध करती है और वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। घर एवं वाटिकाओं में तुलसी का रोपण स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक लाभ प्रदान करता है। सप्तऋषि वाटिका में तुलसी औषधीय, आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय संतुलन का महत्वपूर्ण घटक है।

6. जामुन (विश्वामित्र ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Syzygium cumini*

कुलः Myrtaceae

महत्वः जामुन एक बहुउपयोगी फलदार एवं औषधीय वृक्ष है। इसके फल मधुमेह रोगियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी माने जाते हैं। जामुन के बीज रक्त शर्करा नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। यह वृक्ष छाया प्रदान करता है तथा शहरी एवं ग्रामीण पर्यावरण में तापमान नियंत्रण में सहायक है। जामुन की लकड़ी मजबूत होती है और कृषि औजारों में उपयोग होती है। सप्तऋषि वाटिका में जामुन स्वास्थ्य, पोषण एवं पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक है।

7. अशोक (जमदग्नि ऋषि)

वैज्ञानिक नामः *Saraca asoca*

कुलः Fabaceae

महत्वः अशोक वृक्ष को दुःखनाशक एवं सौंदर्य का प्रतीक माना गया है। आयुर्वेद में इसकी छाल स्त्री रोगों के उपचार में विशेष रूप से उपयोगी है।

यह वृक्ष सदाबहार होता है और अपने सुंदर पुष्पों से वातावरण को आकर्षक बनाता है। अशोक धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह शुद्ध वातावरण प्रदान करता है और हरित आवरण बढ़ाने में सहायक है। सप्तऋषि वाटिका में अशोक वृक्ष सौंदर्य, औषधीय उपयोग एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है।

नक्षत्र वाटिका

परिचय

नक्षत्र वाटिका एक विशिष्ट एवं वैज्ञानिक अवधारणा पर आधारित उद्यान है, जिसमें भारतीय वैदिक ज्योतिष के 27 नक्षत्रों के अनुसार 27 औषधीय एवं पवित्र वृक्षों/पौधों का रोपण किया जाता है। यह उद्यान प्रकृति, ज्योतिष, आयुर्वेद और पर्यावरण संरक्षण का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है। नक्षत्र वाटिका का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देना है।

नक्षत्र वाटिका की अवधारणा

भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्म किसी न किसी नक्षत्र में होता है और प्रत्येक नक्षत्र का संबंध एक विशेष वृक्ष से माना गया है। इन वृक्षों की पूजा, संरक्षण एवं उनके सान्निध्य से सकारात्मक ऊर्जा, स्वास्थ्य लाभ एवं ग्रह दोषों में कमी मानी जाती है। इसी विश्वास के आधार पर नक्षत्र वाटिका की स्थापना की जाती है।

नक्षत्र वाटिका का महत्व

1. **पर्यावरण संरक्षण** – जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है।
2. **औषधीय महत्व** – अधिकांश वृक्ष आयुर्वेदिक दृष्टि से उपयोगी हैं।
3. **धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व** – भारतीय परंपराओं का संरक्षण।
4. **मानसिक एवं आध्यात्मिक शांति** – सकारात्मक ऊर्जा का संचार।
5. **शैक्षणिक उपयोग** – छात्रों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी।

नक्षत्र वाटिका की स्थापना

नक्षत्र वाटिका की स्थापना मंदिर परिसरों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, वन विभाग, ग्राम पंचायत, पार्क एवं सार्वजनिक स्थलों पर की जा सकती है। पौधों को गोलाकार या ज्योतिषीय क्रम में लगाया जाता है तथा प्रत्येक वृक्ष के साथ संबंधित नक्षत्र का नाम, वैज्ञानिक नाम और औषधीय महत्व दर्शाने वाली पट्टिका लगाई जाती है।

नक्षत्र वाटिका में पाए जाने वाले प्रमुख पौधे

1. कुचला (अश्विनी नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Strychnos nux-vomica* L.

कुलः Loganiaceae

महत्वः कुचला एक मध्यम आकार का औषधीय वृक्ष है, जिसका विशेष महत्व आयुर्वेदिक चिकित्सा में बताया गया है। इसके बीजों में स्ट्रिक्नीन और ब्रूसिन जैसे एल्कलॉइड पाए जाते हैं, जिनका उपयोग अत्यंत शुद्धिकरण (शोधन) के बाद ही किया जाता है। आयुर्वेद में कुचला का प्रयोग पाचन शक्ति बढ़ाने, स्नायु दुर्बलता, वात विकार तथा कुछ तंत्रिका रोगों में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में यह पौधा औषधीय चेतना और सावधानीपूर्ण उपयोग के ज्ञान का प्रतीक है। इसके फल गोल और नारंगी रंग के होते हैं। यह पौधा शुष्क व अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में अच्छी तरह विकसित होता है तथा मृदा संरक्षण में भी सहायक है।

2. आँवला (भरणी नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Phyllanthus emblica* L.

कुलः Phyllanthaceae

महत्वः आँवला एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष है, जिसे आयुर्वेद में "रसायन" कहा गया है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन C पाया जाता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है। आँवला त्रिफला चूर्ण का प्रमुख घटक है और पाचन, यकृत, त्वचा तथा केश स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। नक्षत्र वाटिका में आँवला दीर्घायु, स्वास्थ्य और संतुलन का प्रतीक माना जाता है। इसका उपयोग मुरब्बा, चूर्ण, रस और औषधियों के निर्माण में किया जाता है। यह वृक्ष सूखा सहनशील होता है और बंजर भूमि में भी उग सकता है, जिससे यह पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है।

3. गूलर (कृत्तिका नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Ficus racemosa* L.

कुलः Moraceae

महत्वः गूलर एक पवित्र एवं औषधीय वृक्ष है, जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। इसके फल, छाल और पत्तियाँ औषधीय गुणों से भरपूर होती हैं। आयुर्वेद में गूलर का उपयोग मधुमेह, अतिसार, रक्तस्राव तथा स्त्री रोगों में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में यह वृक्षपारिस्थितिक संतुलन का प्रतीक है, क्योंकि इसके फल अनेक पक्षियों और जीवों का आहार हैं। गूलर नदी तटों और नम स्थानों पर अच्छी तरह बढ़ता है तथा मृदा कटाव रोकने में सहायक होता है। यह वृक्ष जैव विविधता संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. जामुन (रोहिणी नक्षत्र)

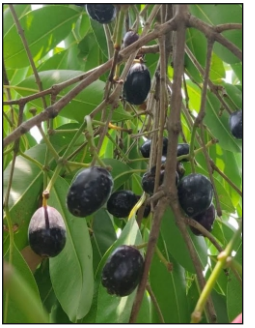

वैज्ञानिक नामः *Syzygium cumini* (L.) Skeels

कुलः Myrtaceae

महत्वः जामुन एक बहुउपयोगी फलदार एवं औषधीय वृक्ष है। इसके फल मधुमेह नियंत्रण में अत्यंत उपयोगी माने जाते हैं, क्योंकि इसके बीजों में रक्त शर्करा नियंत्रित करने वाले तत्व पाए जाते हैं। जामुन का उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों, सिरका, स्क्वैश और जैम के रूप में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में जामुन स्वास्थ्य, शीतलता और दीर्घायु का प्रतीक है। यह वृक्ष छाया प्रदान करता है और शहरी हरियाली के लिए उपयुक्त है। इसके घने पत्ते वातावरण को शुद्ध करने में सहायक होते हैं।

5. खैर (मृगशीर्ष नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Acacia catechu* (L.f.) Willd.

कुलः Fabaceae

महत्वः खैर एक महत्वपूर्ण औषधीय एवं आर्थिक दृष्टि से उपयोगी वृक्ष है। इससे प्राप्त "कत्था" का

उपयोग पान, औषधि और रंग उद्योग में किया जाता है। आयुर्वेद में खैर की छाल और हृदयकाष्ठ का उपयोग दंत रोग, खांसी, अतिसार और त्वचा रोगों में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में खैर संयम और औषधीय शक्ति का प्रतीक है। यह वृक्ष शुष्क क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है तथा मृदा उर्वरता बढ़ाने में सहायक होता है, क्योंकि यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण करता है।

6. तेंदू (आर्द्रा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Diospyros melanoxylon* Roxb.

कुलः Ebenaceae

महत्वः तेंदू एक महत्वपूर्ण वन वृक्ष है, जिसकी पत्तियाँ बीड़ी उद्योग में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं। इसके फल खाने योग्य होते हैं और पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं। आयुर्वेद में तेंदू का उपयोग पाचन विकार और रक्तस्राव में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में तेंदू आजीविका, वन–आधारित अर्थव्यवस्था और पारंपरिक ज्ञान का प्रतीक है। यह वृक्ष सूखा सहनशील होता है और मिश्रित वनों में जैव विविधता को बढ़ावा देता है।

7. बाँस (पुनर्वसु नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Bambusa* spp.

कुलः Poaceae

महत्वः बाँस एक अत्यंत उपयोगी और तीव्र गति से बढ़ने वाला पौधा है, जिसे "हरित सोना" भी कहा जाता है। इसका उपयोग निर्माण, हस्तशिल्प, कागज उद्योग और कृषि उपकरणों में किया जाता है।आयुर्वेद में बाँस से प्राप्त वंशलोचन का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में बाँस लचीलापन, शक्ति और सतत् विकास का प्रतीक है। यह मृदा कटाव रोकता है, कार्बन अवशोषण में सहायक है और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

8. पीपल (पुष्य नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa* L.

कुलः Moraceae

महत्वः पीपल एक पवित्र एवं दीर्घायु वृक्ष है, जिसे भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान प्राप्त है। यह दिन–रात अधिक मात्रा में ऑक्सीजन उत्सर्जन के लिए प्रसिद्ध है। आयुर्वेद में पीपल की छाल, पत्तियाँ और फल अनेक रोगों में उपयोगी हैं। नक्षत्र वाटिका में पीपल आध्यात्मिकता, शुद्धता और पर्यावरण संतुलन का प्रतीक है। यह वृक्ष पक्षियों और जीवों का आश्रय स्थल है तथा जैव विविधता संरक्षण में सहायक है।

9. नागकेसर (आश्लेषा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Mesua ferrea* L.

कुलः Calophyllaceae

महत्वः नागकेसर एक सुगंधित एवं औषधीय वृक्ष है, जिसके पुष्प और बीज आयुर्वेद में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसका उपयोग रक्तस्राव, पाचन विकार और त्वचा रोगों में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में नागकेसर पवित्रता, सौंदर्य और औषधीय समृद्धि का प्रतीक है। इसके फूल धार्मिक अनुष्ठानों में भी प्रयोग किए जाते हैं। यह वृक्ष आर्द्र और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अच्छी तरह विकसित होता है।

10. वटवृक्ष (मघा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Ficus benghalensis* L.

कुलः Moraceae

महत्वः वटवृक्ष भारतीय संस्कृति में अमरता और संरक्षण का प्रतीक माना जाता है। इसकी विशाल छत्राकार संरचना अनेक जीवों को आश्रय प्रदान करती है। आयुर्वेद में इसकी जड़, छाल और पत्तियों का उपयोग मधुमेह, त्वचा रोग और स्त्री रोगों में किया जाता है। नक्षत्र वाटिका में वटवृक्ष स्थिरता, दीर्घायु और पारिस्थितिक संतुलन का प्रतीक है। यह वृक्ष वातावरण को शीतल रखता है और कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

11. पलाश (पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Butea monosperma*

कुलः Fabaceae

महत्वः पलाश भारत का एक बहुपयोगी एवं पवित्र वृक्ष है, जिसे "वन की ज्वाला" भी कहा जाता है। नक्षत्र वाटिका में इसका विशेष स्थान है क्योंकि यह पर्यावरणीय संतुलन एवं जैव विविधता संरक्षण में सहायक है। इसके फूलों से प्राकृतिक रंग बनाए जाते हैं, जिनका उपयोग होली एवं वस्त्र रंगाई में होता है। आयुर्वेद में पलाश की छाल, बीज और फूल कृमिनाशक, ज्वरनाशक एवं पाचन सुधारक माने गए हैं। इसके पत्तों का उपयोग पत्तल–दोना बनाने में किया जाता है, जो पर्यावरण अनुकूल है। पलाश मधुमक्खियों के लिए उत्कृष्ट पराग स्रोत है, जिससे शहद उत्पादन बढ़ता है। यह शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगता है और मृदा संरक्षण में सहायक है।

12. कनेर (उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Nerium oleander*

कुलः Apocynaceae

महत्वः कनेर एक सदाबहार, आकर्षक एवं औषधीय पौधा है, जो नक्षत्र वाटिका की सौंदर्यात्मक शोभा बढ़ाता है। इसके गुलाबी, लाल एवं सफेद फूल वातावरण को आकर्षक बनाते हैं। कनेर प्रदूषण सहनशील पौधा है, इसलिए शहरी एवं सड़क किनारे रोपण के लिए उपयुक्त है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में इसका उपयोग त्वचा रोग, सूजन एवं हृदय संबंधी औषधियों में नियंत्रित मात्रा में किया जाता है। धार्मिक दृष्टि से इसे पूजा–पाठ में भी प्रयोग किया जाता है। यह कम पानी में भी जीवित रह सकता है, जिससे जल संरक्षण में सहायक है। नक्षत्र वाटिका में कनेर सकारात्मक ऊर्जा एवं सौंदर्य दोनों का प्रतीक माना जाता है।

13. नीम (हस्त नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Azadirachta indica*

कुलः Meliaceae

महत्वः नीम को "सर्वरोग नाशक" कहा जाता है। नक्षत्र वाटिका में नीम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके पत्ते, छाल, फल एवं बीज औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। नीम में जीवाणुनाशक, विषाणुनाशक एवं कीटनाशक गुण पाए जाते हैं। आयुर्वेद में नीम का उपयोग त्वचा रोग, मधुमेह, ज्वर एवं रक्त शुद्धि के लिए किया जाता है। नीम पर्यावरण को शुद्ध करता है और वायु प्रदूषण को कम करता है। कृषि में नीम खली जैव कीटनाशक के रूप में उपयोगी है। यह दीर्घायु वृक्ष होने के कारण छाया, औषधि और पर्यावरण संरक्षण, तीनों दृष्टियों से उपयोगी है।

14. बेल (चित्रा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Aegle marmelos*

कुलः Rutaceae

महत्वः बेल का वृक्ष धार्मिक एवं औषधीय दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। नक्षत्र वाटिका में इसे पवित्र पौधा माना जाता है। बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित किए जाते हैं। आयुर्वेद में बेल का फल पाचन तंत्र के लिए अत्यंत लाभकारी है, विशेष रूप से अतिसार एवं कब्ज में उपयोगी है। इसके पत्ते, जड़ एवं छाल भी औषधीय गुणों से युक्त हैं। बेल का वृक्ष गर्मी सहनशील है और कम पानी में भी पनपता है। यह वातावरण को शीतलता प्रदान करता है तथा औषधीय उद्यानों में विशेष स्थान रखता है।

15. अर्जुन (स्वाती नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Terminalia arjuna*

कुलः Combretaceae

महत्वः अर्जुन को हृदय रोगों की प्रमुख औषधि माना जाता है। नक्षत्र वाटिका में

इसका रोपण स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का प्रतीक है। अर्जुन की छाल आयुर्वेद में हृदय, रक्तचाप एवं कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण में उपयोगी है। यह वृक्ष नदी किनारे एवं नम क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि करता है और मृदा अपरदन रोकने में सहायक है। अर्जुन का वृक्ष अधिक ऑक्सीजन प्रदान करता है, जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है और औषधीय महत्व के कारण यह अत्यंत मूल्यवान वृक्ष है।

16. कैथा (विशाखा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Limonia acidissima*

कुलः Rutaceae

महत्वः कैथा एक औषधीय एवं फलदार वृक्ष है, जो नक्षत्र वाटिका में पोषण एवं स्वास्थ्य का प्रतीक है। इसके फल पाचन को सुधारते हैं और पेट संबंधी रोगों में उपयोगी हैं। कैथा के फल से चटनी, मुरब्बा एवं शरबत बनाए जाते हैं। आयुर्वेद में इसके गूदे का उपयोग अतिसार एवं कृमि रोग में किया जाता है। यह सूखा सहनशील वृक्ष है और कम उपजाऊ भूमि में भी उग सकता है। कैथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सहारा देता है।

17. मोलश्री (अनुराधा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Mimusops elengi*

कुलः *Sapotaceae*

महत्वः मोलश्री एक सुगंधित पुष्प वाला सदाबहार वृक्ष है। इसके फूलों की सुगंध वातावरण को शुद्ध एवं आनंददायक बनाती है। नक्षत्र वाटिका में मोलश्री मानसिक शांति एवं सौंदर्य का प्रतीक है। आयुर्वेद में इसके फूल, फल एवं छाल का उपयोग दंत रोग, सिरदर्द एवं सूजन में किया जाता है। यह छायादार वृक्ष है और उद्यानों एवं मंदिर परिसरों में लगाया जाता है। मोलश्री पर्यावरणीय दृष्टि से उपयोगी तथा सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण पौधा है।

18. शेमल (ज्येष्ठा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Bombax ceiba*

कुलः Malvaceae

महत्वः शेमल एक विशाल एवं तेज़ी से बढ़ने वाला वृक्ष है। इसके रेशेदार फल गद्दे एवं तकिए भरने में उपयोग किए जाते हैं। नक्षत्र वाटिका में शेमल जैव विविधता संरक्षण में सहायक है, क्योंकि इसके फूल पक्षियों के लिए भोजन का स्रोत हैं। आयुर्वेद में इसकी छाल एवं जड़ का उपयोग बलवर्धक एवं सूजन नाशक के रूप में किया जाता है। यह वृक्ष अधिक कार्बन अवशोषित करता है और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

19. अंजन (मूल नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Hardwickia binata*

कुलः Fabaceae

महत्वः अंजन एक मजबूत लकड़ी वाला वृक्ष है, जो शुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। नक्षत्र वाटिका में यह स्थायित्व एवं सहनशीलता का प्रतीक है। इसकी लकड़ी अत्यंत कठोर होती है और कृषि औजारों एवं निर्माण कार्य में उपयोगी है। अंजन वृक्ष मृदा संरक्षण में सहायक है और भूमि क्षरण को रोकता है। यह कम पानी में भी अच्छी वृद्धि करता है। पर्यावरणीय एवं आर्थिक दोनों दृष्टियों से अंजन एक महत्वपूर्ण वृक्ष है।

20. गिलोय (पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Tinospora cordifolia*

कुलः Menispermaceae

महत्वः गिलोय एक प्रसिद्ध औषधीय लता है, जिसे "अमृत" कहा जाता है। नक्षत्र वाटिका में गिलोय स्वास्थ्य एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता का प्रतीक है। आयुर्वेद में गिलोय का उपयोग ज्वर, मधुमेह,

प्रतिरक्षा बढ़ाने एवं रक्त शुद्धि के लिए किया जाता है। यह बेल सामान्यतः नीम या अन्य वृक्षों पर चढ़कर बढ़ती है। गिलोय पर्यावरण के अनुकूल एवं औषधीय दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान पौधा है।

21. कटहल (उत्तराषाढ़ा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Artocarpus heterophyllus*

कुलः Moraceae

महत्वः कटहल एक बहुउपयोगी एवं दीर्घजीवी फलदार वृक्ष है, जिसे नक्षत्र वाटिका में समृद्धि एवं पोषण का प्रतीक माना जाता है। इसके फल में प्रचुर मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, विटामिन A, C तथा खनिज पाए जाते हैं, जिससे यह खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कच्चे कटहल का उपयोग सब्जी के रूप में तथा पके फल का उपयोग ताजे फल एवं मिठाइयों में किया जाता है। इसके बीज भी पोषक होते हैं। कटहल की लकड़ी मजबूत व टिकाऊ होती है, जिसका उपयोग फर्नीचर एवं निर्माण कार्यों में किया जाता है। औषधीय दृष्टि से यह पाचन सुधारने एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। पर्यावरणीय रूप से यह छायादार वृक्ष कार्बन अवशोषण तथा जैव विविधता संरक्षण में सहायक है।

22. मदार (श्रवण नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Calotropis procera*

कुलः Apocynaceae

महत्वः मदार एक औषधीय एवं धार्मिक महत्व का पौधा है, जिसे नक्षत्र वाटिका में ऊर्जा एवं संरक्षण का प्रतीक माना जाता है। इसके पत्ते, फूल और दूध (latex) आयुर्वेद में त्वचा रोग, सूजन, दमा तथा जोड़ों के दर्द के उपचार में उपयोगी माने जाते हैं। मदार के फूल भगवान शिव की पूजा में विशेष रूप से अर्पित किए जाते हैं। यह पौधा शुष्क एवं बंजर भूमि में भी आसानी से उग जाता है, जिससे भूमि संरक्षण में सहायक होता है। इसकी गहरी जड़ें मृदा अपरदन को रोकती हैं। मदार औषधीय पौधों की विविधता बढ़ाने के साथ–साथ पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

23. शमी (धनिष्ठा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Prosopis cineraria*

कुलः Fabaceae

महत्वः शमी वृक्ष को भारतीय संस्कृति में पवित्र एवं मंगलकारी माना जाता है। नक्षत्र वाटिका में यह सहनशीलता और स्थिरता का प्रतीक है। शमी की पत्तियाँ, फलियाँ एवं छाल औषधीय गुणों से युक्त होती हैं और पाचन, बुखार तथा त्वचा रोगों में उपयोगी मानी जाती हैं। यह वृक्ष नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है, जिससे कृषि एवं वानिकी दोनों के लिए लाभकारी है। शुष्क क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति हरित आवरण बनाए रखने में सहायक होती है। इसकी लकड़ी ईंधन एवं कृषि उपकरणों में प्रयुक्त होती है। धार्मिक रूप से दशहरा पर्व पर शमी पूजन का विशेष महत्व है।

24. कदंब (शतभिषा नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Neolamarckia cadamba*

कुलः Rubiaceae

महत्वः कदंब वृक्ष तेज़ी से बढ़ने वाला, घना एवं छायादार वृक्ष है, जिसका नक्षत्र वाटिका में सौंदर्य एवं पर्यावरणीय महत्व है। इसके गोल–आकार के पुष्प आकर्षक होते हैं और मधुमक्खियों व अन्य परागणकर्ताओं को आकर्षित करते हैं। कदंब की लकड़ी हल्की होती है, जिसका उपयोग प्लाईवुड, कागज उद्योग एवं हल्के फर्नीचर में किया जाता है। आयुर्वेद में इसकी छाल एवं पत्तियों का उपयोग ज्वर, सूजन तथा त्वचा रोगों में किया जाता है। यह वृक्ष अधिक कार्बन अवशोषण कर वातावरण को शुद्ध करने में सहायक है। धार्मिक ग्रंथों में कदंब को भगवान श्रीकृष्ण से भी जोड़ा गया है।

25. आम (पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Mangifera indica*

कुलः Anacardiaceae

महत्वः आम को "फलों का राजा" कहा जाता है और नक्षत्र वाटिका में यह समृद्धि एवं मधुरता का प्रतीक है। इसके फल स्वादिष्ट होने के साथ–साथ विटामिन A, C और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं। आम के पत्ते धार्मिक अनुष्ठानों एवं शुभ अवसरों पर उपयोग किए जाते हैं। आयुर्वेद में आम का उपयोग पाचन, ऊर्जा वृद्धि एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसकी लकड़ी हल्के निर्माण कार्यों में प्रयुक्त होती है। आम का वृक्ष दीर्घकाल तक फल देता है, जिससे यह आर्थिक एवं पर्यावरणीय दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

26. नीम (उत्तराभाद्रपद नक्षत्र)

वैज्ञानिक नामः *Azadirachta indica*

कुलः Meliaceae

महत्वः नीम एक बहुउपयोगी औषधीय वृक्ष है, जिसे नक्षत्र वाटिका में स्वास्थ्य एवं शुद्धता का प्रतीक माना जाता है। इसके पत्ते, छाल, बीज एवं तेल जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी एवं कीटनाशक गुणों से युक्त होते हैं। नीम का उपयोग त्वचा रोग, दंत स्वास्थ्य, मधुमेह एवं संक्रमणों के उपचार में किया जाता है। यह प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में कृषि में अत्यंत उपयोगी है। नीम वायु शुद्ध करने में सहायक होता है और शहरी हरित क्षेत्र के लिए आदर्श वृक्ष है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से भी नीम का विशेष स्थान है।

27. महुआ (रेवती नक्षत्र)

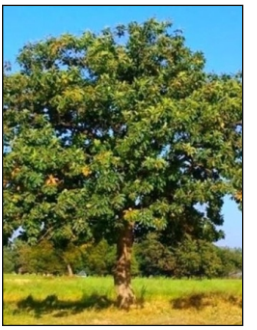

वैज्ञानिक नामः *Madhuca longifolia*

कुलः Sapotaceae

महत्वः महुआ वृक्ष आदिवासी एवं ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग है। नक्षत्र वाटिका में यह आजीविका एवं पोषण का प्रतीक है। इसके फूल पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और खाद्य पदार्थों

तथा पारंपरिक पेय बनाने में उपयोग किए जाते हैं। महुआ के बीजों से तेल प्राप्त होता है, जिसका उपयोग खाद्य, औषधीय एवं साबुन निर्माण में किया जाता है। इसकी छाल एवं पत्तियाँ औषधीय गुणों से युक्त हैं। महुआ सूखे क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह जैव विविधता संरक्षण में सहायक है।

चरक वाटिका

परिचय

चरक वाटिका एक औषधीय पौधों की विशेष उद्यान व्यवस्था है, जिसका नाम आयुर्वेद के महान आचार्य महर्षि चरक के नाम पर रखा गया है। यह वाटिका आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली को संरक्षित, प्रचारित एवं व्यवहारिक रूप से समझाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। चरक वाटिका में विभिन्न प्रकार के औषधीय, सुगंधित एवं उपयोगी वनस्पतियों का वैज्ञानिक ढंग से रोपण किया जाता है, जिससे शिक्षण, अनुसंधान, स्वास्थ्य संरक्षण और जन–जागरूकता को बढ़ावा मिलता है।

चरक वाटिका का उद्देश्य

1. आयुर्वेदिक औषधीय पौधों का संरक्षण एवं संवर्धन करना है।
2. छात्रों, शोधकर्ताओं एवं आम जनता को औषधीय पौधों का व्यावहारिक ज्ञान देना
3. दुर्लभ एवं लुप्तप्राय औषधीय प्रजातियों का संरक्षण करना है।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना है।
5. आयुष (AYUSH) आयुर्वेद, योग, नेचुरोपैथी, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी प्रणाली को बढ़ावा देना

चरक वाटिका की संरचना

चरक वाटिका को सामान्यतः वर्गीकृत एवं व्यवस्थित खंडों में विकसित किया जाता है, जैसे–

- वात, पित्त एवं कफ नाशक पौधों का खंड
- ज्वरनाशक, पाचन, त्वचा रोग एवं तंत्रिका तंत्र से संबंधित पौधों का खंड
- झाड़ियाँ, वृक्ष, लताएँ एवं शाकीय औषधीय पौधों का पृथक क्षेत्र

प्रत्येक पौधे के साथ उसका सामान्य नाम, वैज्ञानिक नाम, कुल (Family), उपयोगी भाग एवं औषधीय गुण दर्शाने वाला सूचना पट्ट लगाया जाता है।

चरक वाटिका में पाए जाने वाले प्रमुख पौधे

1. सिंदूरी

वैज्ञानिक नामः *Mallotus philippensis*

कुलः Euphorbiaceae

चरक वाटिका में सिंदूरी पौधे का महत्वः चरक वाटिका में सिंदूरी एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है, जिसे पारंपरिक आयुर्वेद में "कमेला" के नाम से जाना जाता है। इसके फल–रोम (कम्पिलक) का उपयोग कृमिनाशक, त्वचा रोग, अतिसार एवं पाचन विकारों के उपचार में किया जाता है। यह पौधा यकृत–विकारों में भी उपयोगी माना गया है। कमेला प्राकृतिक रंग (डाई) का स्रोत होने के साथ–साथ जैव–विविधता संरक्षण में सहायक है। चरक वाटिका में इसकी उपस्थिति विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को आयुर्वेदिक वनस्पतियों के व्यावहारिक ज्ञान तथा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से जोड़ती है।

2. अर्जुन

वैज्ञानिक नामः *Terminalia arjuna*

कुलः Combretaceae

चरक वाटिका में अर्जुन पौधे का महत्व : अर्जुन चरक वाटिका का एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष है, जिसे आयुर्वेद में हृदय रोगों के लिए श्रेष्ठ

माना गया है। इसकी छाल काउपयोग हृदय–बलवर्धक, रक्तचाप नियंत्रक तथा कोलेस्ट्रॉल घटाने में किया जाता है। अर्जुन में एंटीऑक्सीडेंट एवं कार्डियो–प्रोटेक्टिव गुण पाए जाते हैं। यह वृक्ष पर्यावरणीय दृष्टि से भी उपयोगी है, क्योंकि इसकी गहरी जड़ें मृदा संरक्षण में सहायक होती हैं। चरक वाटिका में अर्जुन छात्रों को औषधीय एवं पारिस्थितिक महत्व का समन्वित ज्ञान प्रदान करता है।

3. शतावरी

वैज्ञानिक नामः *Asparagus racemosus*

कुलः Asparagaceae

चरक वाटिका में शतावरी पौधे का महत्व : शतावरी आयुर्वेद की एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति है, जिसे "औषधियों की रानी" भी कहा जाता है। चरक संहिता सहित अनेक आयुर्वेदिक ग्रंथों में शतावरी का उल्लेख बल्य, रसायन एवं स्तन्यवर्धक औषधि के रूप में मिलता है। चरक वाटिका में शतावरी का रोपण न केवल आयुर्वेदिक परंपरा को सजीव करता है, बल्कि औषधीय शिक्षा, अनुसंधान एवं जन–जागरूकता की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है। शतावरी की जड़ें प्रमुख औषधीय भाग होती हैं, जिनमें सैपोनिन (शतावेरिन), एल्कलॉइड, फ्लेवोनॉयड एवं अन्य जैव–सक्रिय यौगिक पाए जाते हैं। ये तत्व शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, पाचन तंत्र को सुदृढ़ करने तथा शारीरिक–मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। आयुर्वेद में शतावरी का उपयोग विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य, गर्भावस्था के बाद पोषण, स्तन्यवृद्धि तथा हार्मोनल संतुलन के लिए किया जाता है। चरक वाटिका में शतावरी का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह विद्यार्थियों, शोधार्थियों और आम जन को द्रव्यगुण विज्ञान एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धति की प्रत्यक्ष जानकारी प्रदान करती है। जीवित पौधे के रूप में शतावरी के संरक्षण से औषधीय पौधों की पहचान, प्रवर्धन तकनीक एवं सतत् उपयोग के सिद्धांतों को समझना सरल होता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी शतावरी उपयोगी पौधा है। यह कम उपजाऊ भूमि में भी उग सकती है और मृदा संरक्षण में सहायक होती है। इसकी खेती से जैव–विविधता को बढ़ावा मिलता है तथा औषधीय पौधों के संरक्षण की दिशा में सकारात्मक कदम उठाया जाता है।

4. ब्राह्मी

वैज्ञानिक नामः *Bacopa monnieri*

कुलः *Plantaginaceae*

चरक वाटिका में ब्राह्मी पौधे का महत्व : चरक वाटिका में ब्राह्मी का विशेष महत्व है क्योंकि यह आयुर्वेद की प्रसिद्ध मेध्य औषधि है। इसका उपयोग स्मरण शक्ति, एकाग्रता और बौद्धिक विकास के लिए किया जाता है। चरक संहिता में इसे मस्तिष्क–टॉनिक के रूप में वर्णित किया गया है। ब्राह्मी मानसिक तनाव, चिंता, अनिद्रा तथा अवसाद में लाभकारी मानी जाती है। यह तंत्रिका तंत्र को सुदृढ़ करती है और बच्चों व वृद्धों दोनों के लिए उपयोगी है। चरक वाटिका में ब्राह्मी औषधीय ज्ञान के संरक्षण और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का प्रतीक है।

5. अमलताश

वैज्ञानिक नामः *Cassia fistula*

कुलः Fabaceae (Caesalpinioideae)

चरक वाटिका में अमलताश पौधे का महत्व : अमलताश चरक वाटिका का एक महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष है, जिसे आयुर्वेद में श्रेष्ठ विरेचक औषधि माना गया है। इसके फल गूदे का उपयोग कब्ज, त्वचा रोग, बवासीर और पित्त विकारों में किया जाता है। चरक संहिता में अमलताश को सौम्य रेचक के रूप में वर्णित किया गया है। इसके पीले पुष्प पर्यावरणीय सौंदर्य बढ़ाते हैं और परागणकर्ताओं को आकर्षित करते हैं। चरक वाटिका में अमलताश आयुर्वेदिक चिकित्सा, जैव विविधता संरक्षण और औषधीय वृक्षों के महत्व को दर्शाता है।

6. सदाबहार

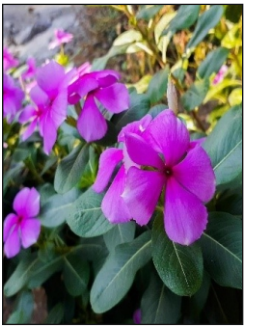

वैज्ञानिक नामः *Catharanthus roseus*

कुलः Apocynaceae

चरक वाटिका में सदाबहार पौधे का महत्व : सदाबहार चरक वाटिका में एक बहुमूल्य औषधीय

पौधा है। आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा दोनों में इसका विशेष महत्व है। यह मधुमेह नियंत्रण, रक्त शुद्धि और त्वचा रोगों में उपयोगी माना जाता है। आधुनिक विज्ञान में इससे प्राप्त एल्कलॉइड कैंसर उपचार में प्रयोग किए जाते हैं। सदाबहार वर्षभर फूल देने वाला पौधा है, जो वाटिका की शोभा बढ़ाता है। चरक वाटिका में इसकी उपस्थिति पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

7. अजवाइन पत्ता

वैज्ञानिक नामः *Trachyspermum ammi*

कुलः Lamiaceae

चरक वाटिका में अजवाइन पौधे का महत्व : अजवाइन चरक वाटिका का एक महत्वपूर्ण औषधीय एवं मसाला पौधा है। आयुर्वेद में इसका उपयोग पाचन विकार, गैस, उदरशूल और खांसी में किया जाता है। यह अग्निदीपक और वातनाशक गुणों से युक्त है। चरक संहिता में इसे पाचन शक्ति बढ़ाने वाली औषधि माना गया है। अजवाइन का पौधा सरल खेती योग्य है और घरेलू औषधि के रूप में व्यापक रूप से उपयोगी है। चरक वाटिका में अजवाइन पारंपरिक घरेलू चिकित्सा ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

8. हरजोड़ / हड़जोड़

वैज्ञानिक नाम – *Cissus quadrangularis*

कुलः Vitaceae

चरक वाटिका में हरजोड़ पौधे का महत्व : हरजोड़ चरक वाटिका का अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय लता पौधा है आयुर्वेद में इसे अस्थि–संधानकारी माना गया है। हड्डी टूटने, मोच, गठिया और अस्थि दुर्बलता में इसका उपयोग किया जाता है। चरक संहिता में इसके बल्य और वातनाशक गुणों का वर्णन मिलता है। यह पौधा तेजी से बढ़ने वाला और सूखा सहनशील है। चरक वाटिका में हरजोड़ पारंपरिक अस्थि–चिकित्सा और वनस्पति औषधि विज्ञान के महत्व को प्रदर्शित करता है।

9. श्यामा तुलसी

वैज्ञानिक नामः *Ocimum tenuiflorum*

कुलः Lamiaceae

चरक वाटिका में श्यामा तुलसी पौधे का महत्व : श्यामा तुलसी चरक वाटिका में रामा तुलसी के साथ एक महत्वपूर्ण औषधीय रूप में स्थापित की जाती है। इसमें अधिक औषधीय सक्रिय तत्व पाए जाते हैं। यह ज्वर, विषाणु संक्रमण, तनाव और श्वसन रोगों में प्रभावी मानी जाती है। आयुर्वेद में इसे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली श्रेष्ठ औषधि कहा गया है। इसकी तीव्र सुगंध कीट–नियंत्रण में सहायक है। चरक वाटिका में श्यामा तुलसी पारंपरिक चिकित्सा और प्राकृतिक स्वास्थ्य संरक्षण का सशक्त उदाहरण है।

10. रामा तुलसी

वैज्ञानिक नामः *Ocimum tenuiflorum*

कुलः Lamiaceae

चरक वाटिका में रामा तुलसी पौधे का महत्व : रामा तुलसी चरक वाटिका का पवित्र एवं औषधीय पौधा है। आयुर्वेद में इसे ज्वरनाशक, कफनाशक और प्रतिरक्षा बढ़ाने वाला माना गया है। यह सर्दी, खांसी, दमा और संक्रमण रोगों में उपयोगी है। चरक संहिता में तुलसी को जीवनदायिनी औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। रामा तुलसी वातावरण को शुद्ध करती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। चरक वाटिका में यह औषधीय, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय महत्व का प्रतीक है।

11. निर्गुंडी

वैज्ञानिक नामः *Vitex negundo*

कुलः Lamiaceae

चरक वाटिका में निर्गुंडी पौधे का महत्व : चरक वाटिका में निर्गुंडी का विशेष स्थान है क्योंकि यह

एक बहुउपयोगी औषधीय पौधा है। आयुर्वेद में इसके पत्ते, जड़ और बीज वात एवं कफ दोष को संतुलित करने में उपयोगी माने गए हैं। यह सूजन, जोड़ों के दर्द, गठिया, सायटिका तथा मांसपेशियों के दर्द में प्रभावी है। इसके पत्तों का काढ़ा खाँसी, जुकाम और दमा में लाभदायक होता है। कीटाणुनाशक गुणों के कारण यह घावों एवं त्वचा रोगों में भी प्रयुक्त होता है। चरक संहिता में वर्णित यह पौधा पारंपरिक चिकित्सा एवं आधुनिक हर्बल अनुसंधान दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

12. अड़ूसा

वैज्ञानिक नामः *Justicia adhatoda*

कुलः canthaceae

चरक वाटिका में अड़ूसा पौधे का महत्व : वासा चरक वाटिका का एक प्रमुख श्वसन रोग निवारक औषधीय पौधा है। इसके पत्तों में उपस्थित एल्कलॉइड वेसिसिन दमा, ब्रोंकाइटिस, खाँसी और तपेदिक में अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं। आयुर्वेद में इसे कफनाशक, रक्तशोधक एवं ज्वरनाशक औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। यह फेफड़ों की कार्यक्षमता को सुधारता है तथा श्वसन तंत्र को सुदृढ़ करता है। चरक संहिता में वासा का उल्लेख कास एवं श्वास रोगों की औषधि के रूप में मिलता है, जिससे इसका औषधीय महत्व सिद्ध होता है।

13. पथरचट्टा

वैज्ञानिक नामः *Bryophyllum pinnatum*

कुलः Crassulaceae

चरक वाटिका में पाथरचट्टा पौधे का महत्व : चरक वाटिका में पाथरचट्टा एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है, जिसे जीवंत प्रजनन क्षमता के लिए जाना जाता है। आयुर्वेद में इसके पत्तों का उपयोग गुर्दे की पथरी, मूत्र विकार, सूजन और घावों के उपचार में किया जाता है। यह मूत्रल, शोथहर एवं शीतल गुणों से युक्त है। पत्तों का रस जलन, फोड़े–फुंसी और त्वचा रोगों में लाभकारी होता है। चरक संहिता में वर्णित इसके औषधीय गुण इसे पारंपरिक चिकित्सा के साथ–साथ आधुनिक औषधीय

अनुसंधान के लिए भी उपयोगी बनाते हैं।

14. सहजन

वैज्ञानिक नामः *Moringa oleifera*

कुलः Moringaceae

चरक वाटिका में सहजन/शिग्रु पौधे का महत्व : सहजन चरक वाटिका का एक पोषक एवं औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पौधा है। आयुर्वेद में इसे शिग्रु कहा गया है और इसके पत्ते, फल, फूल तथा बीज औषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं। यह विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है। सहजन वात–कफ नाशक, पाचन सुधारक एवं सूजनरोधी गुणों से युक्त है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप और पोषण संबंधी विकारों में यह विशेष लाभकारी है। चरक संहिता में इसका उल्लेख स्वास्थ्य संवर्धक एवं रोगनाशक औषधि के रूप में मिलता है।

नन्दन वन

परिचय

नंदन वन भारतीय पौराणिक कथाओं में वर्णित एक दिव्य और अलौकिक उपवन है, जिसे देवराज इन्द्र का स्वर्गीय उद्यान माना जाता है। यह वन स्वर्गलोक में स्थित है और अपनी अनुपम सुंदरता, दिव्य वनस्पतियों, सुगंधित पुष्पों तथा सदैव सुख–शांति प्रदान करने वाले वातावरण के लिए प्रसिद्ध है।

पौराणिक महत्व

हिंदू धर्मग्रंथों, विशेषकर पुराणों और महाकाव्यों में नंदन वन का उल्लेख मिलता है। यह वन देवताओं के मनोरंजन, विश्राम और उत्सवों का प्रमुख स्थल है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ देवता, अप्सराएँ, गंधर्व और किन्नर निवास करते हैं। इन्द्रदेव के साथ–साथ अन्य देवता भी यहाँ विचरण करते हैं।

नंदन वन को कल्पवृक्षों से युक्त बताया गया है, जो इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। यहाँ के वृक्ष सदैव हरे–भरे रहते हैं और हर ऋतु में पुष्प–फल से लदे रहते हैं।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतीकात्मकता

नंदन वन केवल एक भौतिक वन नहीं, बल्कि आनंद, समृद्धि, सौंदर्य और आध्यात्मिक सुख का प्रतीक है। यह मानव जीवन में प्रकृति के महत्व, संतुलन और सौंदर्यबोध को दर्शाता है। साहित्य और काव्य में नंदन वन को आदर्श उपवन के रूप में चित्रित किया गया है।

साहित्यिक उल्लेख

संस्कृत साहित्य, काव्यों और नाटकों में नंदन वन का बार–बार उल्लेख मिलता है। कवियों ने इसकी तुलना पृथ्वी के किसी भी सुंदर वन से ऊपर रखी है और इसे स्वर्गीय आनंद का प्रतीक माना है।

नंदन वन का महत्व

1. जैव विविधता संरक्षण (Biodiversity Conservation)

नंदन वन में विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष, झाड़ियाँ, औषधीय पौधे, लताएँ एवं घासें पाई जाती हैं। यह विविधता जीन पूल के संरक्षण में सहायक होती है तथा दुर्लभ और स्थानीय प्रजातियों को सुरक्षित आवास प्रदान करती है।

2. पर्यावरण संतुलन में योगदान

नंदन वन कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण कर ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है, जिससे वायुमंडलीय संतुलन बना रहता है। यह तापमान नियंत्रण, आर्द्रता बनाए रखने तथा स्थानीय जलवायु को अनुकूल बनाने में सहायक है।

3. मृदा संरक्षण एवं उर्वरता वृद्धि

वृक्षों की जड़ें मृदा अपरदन को रोकती हैं। पत्तियों एवं जैविक अवशेषों के अपघटन से मृदा में जैविक पदार्थ बढ़ता है, जिससे मृदा की संरचना और उर्वरता में सुधार होता है।

4. जल संरक्षण एवं भू-जल पुनर्भरण

नंदन वन वर्षा जल को अवशोषित कर भूमि में संचित करता है, जिससे भू–जल स्तर बनाए रखने में सहायता मिलती है। यह जल चक्र को संतुलित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. औषधीय एवं वनस्पति अनुसंधान का केंद्र

नंदन वन में पाए जाने वाले अनेक औषधीय पौधे पारंपरिक एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह वनस्पति विज्ञान, पारिस्थितिकी एवं औषधीय अनुसंधान के लिए एक जीवंत प्रयोगशाला है।

6. पारिस्थितिक तंत्र सेवाएँ (Ecosystem Services)

परागण, बीज प्रसार, कीट नियंत्रण तथा पक्षियों एवं अन्य जीवों के लिए आवास उपलब्ध करानाकृये सभी सेवाएँ नंदन वन के वैज्ञानिक महत्व को दर्शाती हैं।

7. पर्यावरण शिक्षा एवं जन-जागरूकता

नंदन वन छात्रों, शोधकर्ताओं एवं आम नागरिकों के लिए पर्यावरण शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन है, जिससे प्रकृति संरक्षण के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होता है।

1. पीपल

वैज्ञानिक नामः *Ficus religiosa*

कुलः Moraceae

महत्वः पीपल भारतीय संस्कृति, पर्यावरण एवं आयुर्वेद में अत्यंत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसे देववृक्ष माना जाता है और धार्मिक स्थलों पर इसकी विशेष प्रतिष्ठा है। पीपल का वृक्ष दिन–रात ऑक्सीजन छोड़ने की क्षमता के कारण वायुमंडल को शुद्ध करता है। इसकी पत्तियाँ, छाल एवं फल औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। आयुर्वेद में इसका उपयोग दमा, मधुमेह, त्वचा रोग, हृदय रोग एवं पाचन संबंधी विकारों में किया जाता है। नंदन वन में पीपल जैव विविधता को बढ़ावा देता है तथा पक्षियों और कीटों को आश्रय प्रदान करता है। इसकी गहरी जड़ें मृदा संरक्षण में सहायक होती हैं। यह वृक्ष दीर्घायु, छायादार एवं पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

2. बरगद/वट वृक्ष

वैज्ञानिक नामः *Ficus benghalensis*

कुलः Moraceae

महत्वः बरगद को भारत का राष्ट्रीय वृक्ष कहा जाता है। यह विशाल, दीर्घायु एवं बहु–तना वृक्ष है, जो पर्यावरणीय संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी वायवीय जड़ें मिट्टी को बाँधकर कटाव रोकती हैं। आयुर्वेद में इसकी छाल, पत्तियाँ और जड़ें मधुमेह, दस्त, दंत रोग एवं त्वचा रोगों में उपयोगी हैं। बरगद विशाल छाया प्रदान करता है, जिससे नंदन वन में तापमान नियंत्रित रहता है। यह अनेक पक्षियों, जीवों एवं कीटों का आश्रय स्थल है। धार्मिक दृष्टि से इसे वट सावित्री से जोड़ा जाता है। यह वृक्ष सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. चंदन

वैज्ञानिक नामः *Santalum album*

कुलः Santalaceae

महत्वः चंदन एक बहुमूल्य एवं सुगंधित वृक्ष है, जिसका उपयोग औषधि, इत्र,

सौंदर्य प्रसाधन एवं धार्मिक कार्यों में होता है। चंदन की लकड़ी एवं तेल शीतल, जीवाणुनाशक एवं मानसिक शांति प्रदान करने वाले होते हैं। आयुर्वेद में इसका प्रयोग त्वचा रोग, ज्वर, सिरदर्द एवं तनाव में किया जाता है। नंदन वन में चंदन आर्थिक एवं औषधीय महत्व के साथ जैव विविधता को भी समृद्ध करता है। यह अर्ध–परजीवी पौधा है, जो अन्य पौधों से पोषण प्राप्त करता है। इसकी खेती से दीर्घकालीन आर्थिक लाभ संभव है।

4. कचनार

वैज्ञानिक नामः *Bauhinia variegata*

कुलः Fabaceae

महत्वः कचनार एक सुंदर पुष्पीय एवं औषधीय वृक्ष है। इसके फूल, पत्तियाँ एवं छाल आयुर्वेद में गले की बीमारियों, थायरॉइड, बवासीर एवं सूजन में उपयोगी हैं। इसके फूल सब्जी के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। नंदन वन में कचनार सौंदर्य वृद्धि के साथ–साथ मधुमक्खियों एवं परागण कीटों को आकर्षित करता है। यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायक है, जिससे मृदा उर्वरता बढ़ती है। वसंत ऋतु में इसके रंग–बिरंगे फूल वन को आकर्षक बनाते हैं।

5. इमली

वैज्ञानिक नामः *Tamarindus indica*

कुलः Fabaceae

महत्वः इमली एक बहुउपयोगी फलदार वृक्ष है। इसके फल का उपयोग भोजन, औषधि एवं उद्योग में किया जाता है। इमली पाचन को सुधारती है, विटामिन एवं खनिजों से भरपूर होती है। इसकी छाया सघन होती है, जो नंदन वन में विश्राम स्थल का कार्य करती है। आयुर्वेद में इसका उपयोग ज्वर, कब्ज एवं रक्त शुद्धि में होता है। यह सूखा सहनशील वृक्ष है और दीर्घकाल तक उत्पादन देता है।

6. नीम

वैज्ञानिक नामः *Azadirachta indica*

कुलः Meliaceae

महत्वः नीम को "सर्वरोगनाशक" कहा जाता है। यह औषधीय गुणों से भरपूर अत्यंत उपयोगी वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ, छाल, बीज और तेल जीवाणुनाशक, कीटनाशक एवं रोग प्रतिरोधक गुण रखते हैं। आयुर्वेद में नीम का प्रयोग त्वचा रोग, मधुमेह, रक्त विकार, दंत रोग एवं ज्वर में किया जाता है। नंदन वन में नीम वायु को शुद्ध करता है तथा पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करता है। यह प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में कृषि के लिए भी उपयोगी है। इसकी छाया और हरियाली तापमान नियंत्रण में सहायक होती है।

7. अर्जुन

वैज्ञानिक नामः *Terminalia arjuna*

कुलः Combretaceae

महत्वः अर्जुन एक महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष है, जो विशेष रूप से हृदय रोगों के लिए प्रसिद्ध है। इसकी छाल आयुर्वेद में हृदय को मजबूत करने, रक्तचाप संतुलन और कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण में उपयोग की जाती है। नदियों और जल स्रोतों के किनारे उगने वाला यह वृक्ष मृदा कटाव रोकने में सहायक है। नंदन वन में अर्जुन पर्यावरणीय स्थिरता, औषधीय शिक्षा एवं जैव विविधता संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी लकड़ी भी मजबूत और टिकाऊ होती है।

8. रीठा

वैज्ञानिक नामः *Sapindus mukorossi*

कुलः Sapindaceae

महत्वः रीठा एक बहुउपयोगी औषधीय एवं आर्थिक महत्व का वृक्ष है। इसके फल प्राकृतिक साबुन के

रूप में उपयोग किए जाते हैं। रीठा बालों की सफाई, त्वचा रोग, खांसी और दमा में उपयोगी है। नंदन वन में रीठा जैविक जीवनशैली और पर्यावरण अनुकूल उत्पादों के प्रति जागरूकता बढ़ाता है। यह रासायनिक साबुनों का प्राकृतिक विकल्प है और पर्यावरण प्रदूषण कम करने में सहायक है।

9. अशोक

वैज्ञानिक नामः *Saraca asoca*

कुलः Fabaceae

महत्वः अशोक एक पवित्र एवं औषधीय वृक्ष है। इसे शोक नाशक माना जाता है। आयुर्वेद में इसकी छाल स्त्री रोगों, रक्तस्राव और हार्मोन संतुलन में उपयोगी है। नंदन वन में अशोक सौंदर्य, धार्मिक महत्व और औषधीय उपयोग का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत करता है। इसके घने पत्ते और आकर्षक फूल वातावरण को शांत एवं पवित्र बनाते हैं।

10. आम

वैज्ञानिक नामः *Mangifera indica*

कुलः Anacardiaceae

महत्वः आम को "फलों का राजा" कहा जाता है। यह पोषण, स्वाद और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसके फल विटामिन A, C और खनिजों से भरपूर होते हैं। आम की पत्तियाँ धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होती हैं। नंदन वन में आम फल उत्पादन, छाया, जैव विविधता और आजीविका संवर्धन में सहायक है।

11. कुसुम

वैज्ञानिक नामः *Schleichera oleosa*

कुलः Sapindaceae

महत्वः कुसुम एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं औषधीय वृक्ष है। इसके बीज से प्राप्त तेल का उपयोग औषधि, साबुन और दीपक जलाने में होता है। यह लाख की खेती के लिए भी उपयोगी है।

नंदन वन में कुसुम ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कीट पालन और जैव विविधता संरक्षण में सहायक है।

12. कदम्ब

वैज्ञानिक नामः *Neolamarckia cadamba*

कुलः Rubiaceae

महत्वः कदम्ब धार्मिक, औषधीय और सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसके फूल भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े हैं। यह तीव्र गति से बढ़ने वाला वृक्ष है और पर्यावरण सुधार में सहायक है। नंदन वन में कदम्ब छाया, हरियाली और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाता है।

13. सिल्वर ओक

वैज्ञानिक नामः *Grevillea robusta*

कुलः Proteaceae

महत्वः सिल्वर ओक एक तेज़ी से बढ़ने वाला सदाबहार वृक्ष है, जो नंदन वन में हरियाली एवं सौंदर्य बढ़ाने में सहायक होता है। इसकी पत्तियाँ आकर्षक सिल्वर आभा लिए होती हैं, जिससे यह सजावटी दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह वृक्ष वायुप्रदूषण को कम करने और कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषण में सहायक होता है। सिल्वर ओक की लकड़ी हल्की, मजबूत और टिकाऊ होती है, जिसका उपयोग फर्नीचर, प्लाईवुड एवं कृषि औजारों में किया जाता है। यह वृक्ष कृषिवानिकी प्रणालियों में भी उपयोगी है क्योंकि यह फसलों पर अधिक छाया नहीं डालता। नंदन वन में इसका रोपण मृदा उर्वरता बढ़ाने, तापमान नियंत्रण एवं हरित आवरण विस्तार में योगदान देता है।

14. बीजासाल

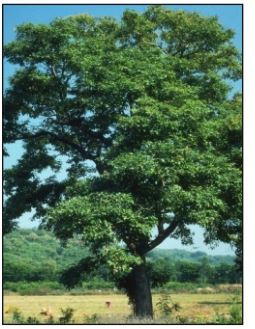

वैज्ञानिक नामः *Pterocarpus marsupium*

कुलः Fabaceaes

महत्वः बीजासाल एक बहुमूल्य औषधीय एवं काष्ठ वृक्ष है, जो नंदन वन की जैव विविधता को समृद्ध

करता है। इसकी लकड़ी अत्यंत मजबूत और टिकाऊ होती है, जिसका उपयोग निर्माण कार्य एवं फर्नीचर में किया जाता है। आयुर्वेद में बीजासाल की छाल और हृदयकाष्ठ का प्रयोग मधुमेह, रक्त विकार और सूजन के उपचार में किया जाता है। यह वृक्ष नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सहायक होता है, जिससे मृदा की उर्वरता बढ़ती है। इसके फूल मधुमक्खियों के लिए पराग स्रोत प्रदान करते हैं। नंदन वन में बीजासाल का रोपण औषधीय संरक्षण, मृदा सुधार एवं दीर्घकालीन वन विकास की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

15. जामुन

वैज्ञानिक नामः *Syzygium cumini*

कुलः Myrtaceae

महत्वः जामुन एक फलदार एवं औषधीय वृक्ष है, जो नंदन वन में पोषण एवं जैव विविधता का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके फल स्वादिष्ट होने के साथ–साथ मधुमेह नियंत्रण में अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं।

जामुन की छाल, बीज और पत्तियाँ आयुर्वेदिक औषधियों में उपयोग होती हैं। यह वृक्ष घनी छाया प्रदान करता है तथा पक्षियों और वन्य जीवों के लिए आश्रय स्थल बनता है। जामुन वायुमंडलीय प्रदूषण को कम करने में सहायक है और मृदा अपरदन को रोकता है। नंदन वन में जामुन का रोपण पर्यावरणीय, औषधीय एवं खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

16. दुधी

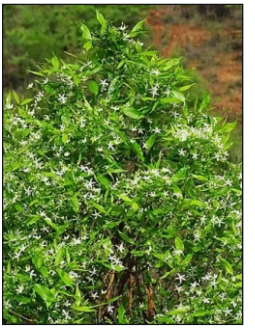

वैज्ञानिक नामः *Wrightia tinctoria*

कुलः Apocynaceae

महत्वः दुधी एक महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष है, जिसे नंदन वन में पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान के संरक्षण हेतु लगाया जाता है। इसकी छाल और पत्तियों से प्राप्त दूधिया रस त्वचा रोगों, सोरायसिस और बालों के उपचार में उपयोगी होता है। यह वृक्ष मध्यम आकार का होता है और शुष्क क्षेत्रों में भी आसानी से उग जाता है। दुधी की पत्तियाँ प्राकृतिक रंग (डाई) बनाने में

प्रयुक्त होती हैं। यह वृक्ष मृदा संरक्षण में सहायक है तथा स्थानीय जैव विविधता को समर्थन देता है। नंदन वन में दुधी का रोपण औषधीय शिक्षा और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण को बढ़ावा देता है।

17. पुत्रंजीव

वैज्ञानिक नामः *Putranjiva roxburghii*

कुलः Putranjivaceae

महत्वः पुत्रंजीव एक पवित्र एवं औषधीय महत्व का वृक्ष है, जिसे भारतीय परंपरा में संतान सुख से जोड़ा जाता है। नंदन वन में इसका रोपण सांस्कृतिक एवं औषधीय दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इसके बीजों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। यह वृक्ष सदाबहार होता है और हरियाली बनाए रखने में सहायक है। इसकी घनी पत्तियाँ वायु शोधन और ध्वनि प्रदूषण कम करने में सहायक होती हैं। पुत्रंजीव पक्षियों को आश्रय और भोजन प्रदान करता है। नंदन वन में यह वृक्ष पर्यावरणीय संतुलन, सांस्कृतिक संरक्षण एवं हरित सौंदर्य को सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

"राम–वन" रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा स्थापित एक ऐसा समग्र हरित शैक्षणिक एवं शोध स्थल है, जो पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन, भारतीय सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत करता है। यह केवल वृक्षारोपण अथवा सौंदर्यीकरण की पहल नहीं है, बल्कि एक जीवंत ओपन–एयर लर्निंग सिस्टम है, जहाँ विद्यार्थी, शोधकर्ता और समाज प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर सकते हैं।

इस वन में विकसित हरिशंकरी, पंचवटी, नवग्रह, राशि, सप्तऋषि, नक्षत्र, नंदन वन तथा चरक वाटिका जैसी विषय–आधारित वाटिकाएँ भारतीय परंपरा में निहित वनस्पति ज्ञान को वैज्ञानिक आधार पर समझने का सशक्त माध्यम बनती हैं। ये वाटिकाएँ छात्रों को यह सिखाती हैं कि किस प्रकार धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक प्रतीक और वैज्ञानिक उपयोगिता एक–दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इससे पर्यावरणीय संतुलन, औषधीय पौधों का संरक्षण, पारिस्थितिक तंत्र सेवाएँ तथा सतत् विकास की अवधारणा को व्यवहारिक रूप से समझने का अवसर मिलता है।

"राम वन" का शैक्षणिक महत्व अत्यंत व्यापक है। यह स्थल वनस्पति विज्ञान, वानिकी, कृषि, पर्यावरण विज्ञान, आयुर्वेद, पारिस्थितिकी और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों के लिए एक लाइव लैबोरेटरी के रूप में कार्य करता है। यहाँ छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान से आगे बढ़कर प्रत्यक्ष अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और शोध करने का अवसर मिलता है। साथ ही, यह वन स्थानीय समुदाय, विद्यालयों और महाविद्यालयों के लिए पर्यावरणीय जागरूकता, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और शैक्षणिक भ्रमण का केंद्र बनकर समाज को भी लाभान्वित करता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से "राम वन" जैव विविधता संरक्षण, कार्बन अवशोषण, मृदा एवं जल संरक्षण, सूक्ष्म जलवायु सुधार तथा वन्यजीवों के लिए सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विश्वविद्यालय परिसर को न केवल हरित बनाता है, बल्कि उसे एक आदर्श सतत् विकास मॉडल के रूप में भी स्थापित करता है।

अंततः, "राम वन" भावी पीढ़ियों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील, वैज्ञानिक दृष्टि से जागरूक और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ नागरिक बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी पहल है। यह पहल यह संदेश देती है कि शिक्षा, अनुसंधान और पर्यावरण संरक्षण जब एक साथ चलते हैं, तभी सतत् और संतुलित भविष्य की नींव रखी जा सकती है।

समय जगत

कुलपति ने किया विवि परिसर स्थित 'राम वन' का निरीक्षण'

कुलपति ने किया विवि परिसर स्थित 'राम वन' का निरीक्षण

हरित, शिक्षण-अनुकूल एवं आकर्षक परिसर विकसित करने के दिए निर्देश

केंद्रीय कृषि विवि में कुलपति ने किया 'राम वन' का निरीक्षण

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक कुमार सिंह ने सोमवार को विश्वविद्यालय परिसर में विकसित हो रहे 'राम वन' का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विकसित एवं विकासाधीन हिस्सों का अवलोकन कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान कुलपति ने हरिशंकरी, पंचवटी, नंदन वन एवं सप्तऋषि कुंज सहित अन्य विकसित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। उनके संरक्षण, संरचनात्मक विकास और हरित परिदृश्य को आकर्षक बनाने के निर्देश दिए।

कुलपति ने नवग्रह वाटिका, नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका एवं चरक वाटिका का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर विवि के डॉ. मनीष श्रीवास्तव, अधिष्ठाता उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, डॉ. आरके सिंह, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय सहित वानिकी वैज्ञानिक एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। संवाद

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

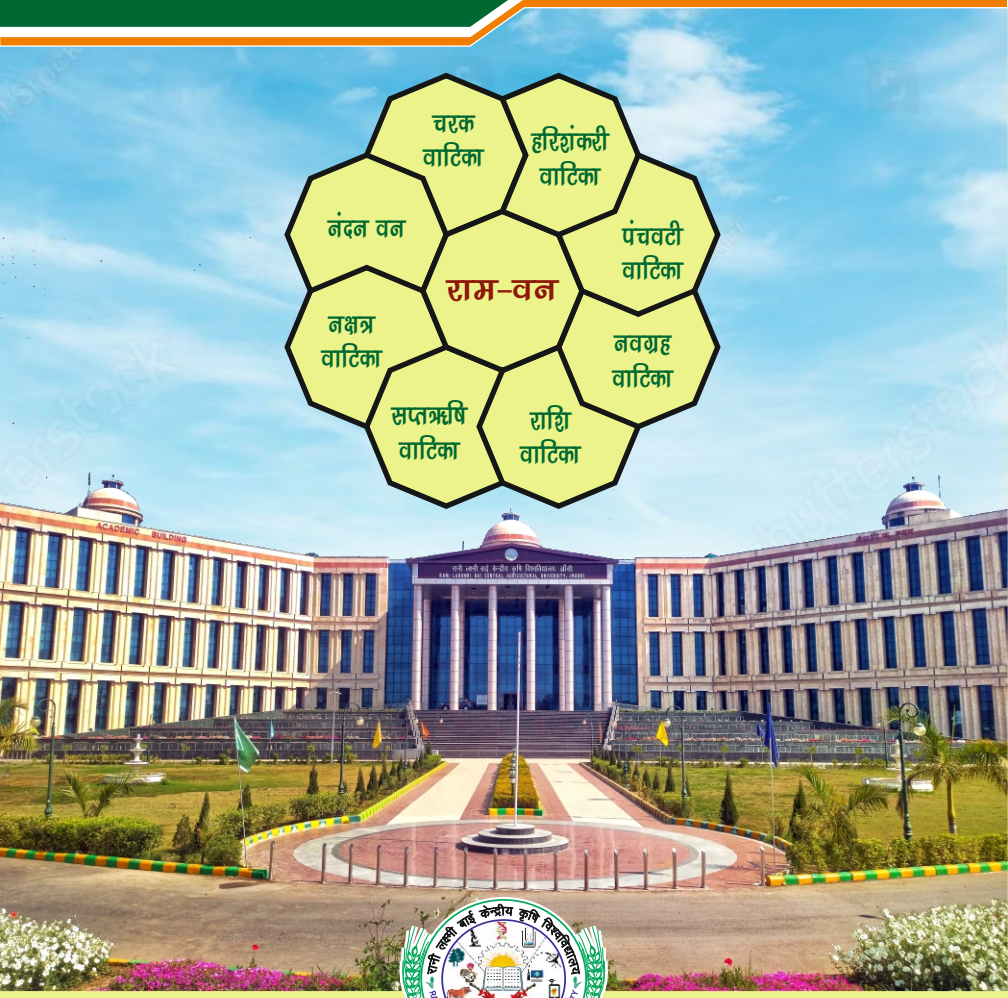

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी-284003, उत्तर प्रदेश, भारत

www.rlbcau.ac.in

978-93-5659-992-5